संजय की कलम से ..

सरलता प्रभु को बहुत प्रिय है

सरल स्वभाव वाला मनुष्य बाहर-भीतर या मनसा-वाचा-कर्मणा से एक-जैसा होता है। वह बनावट, छल-कपट या कुटिलता से व्यवहार नहीं करता। इसलिए लोग उससे निश्चिंत रहते हैं और उसकी सच्ची-सच्ची, भोली-भोली बातें सबको प्यारी लगती हैं। सरल स्वभाव वाला व्यक्ति यदि कोई ऐसी बात भी कह दे जो लोगों को पसंद न हो तो भी वे उससे इतना नाराज़ नहीं होते जितना छल-कपट वाले से क्योंकि वे जानते हैं कि इस मनुष्य का मन साफ है, इसने हमसे धोखा करने या हमें गिराने के विचार से ऐसा नहीं कहा बल्कि हमारे बारे में जो कुछ इसका विचार था, इसने उसे सीधेपन और सादगी से कह दिया है। यदि वे उसकी किसी बात से नाराज़गी प्रकट करें भी तो थोड़ी देर के बाद ही उनका मन अन्दर से उन्हें कहता है – 'ऐसे सीधे और सच्चे आदमी से नाराज़ होना या उससे कुछ बुरा कहना ठीक बात नहीं है।' अत: वे शीघ्र ही और स्वत: ही फिर उससे स्नेह जोड़ लेते हैं क्योंकि उसकी सरलता, सच्चाई, मन की सफाई तथा भोलापन उन्हें आकर्षित करता है।

जैसे सरल स्वभाव वाले व्यक्ति से दूसरे संतुष्ट रहते हैं, वैसे सरल स्वभाव वाला मनुष्य स्वयं भी संतुष्ट रहता है। यदि किसी कारण से उसके मन में किसी प्रकार की असंतुष्टता आये भी, तो भी थोड़ा ही समझाये जाने पर वह अपने सरल स्वभाव के कारण जल्दी ही संतुष्ट हो जाता है। परन्तु टेढ़े स्वभाव वाला मनुष्य दूसरे की बात में, चाहे वह अच्छे भाव से तथा उसके कल्याण के लिए भी कही गई हो, यह देखता रहता है कि इसमें कोई छल या कपट या बनावट तो नहीं है? इस प्रकार वह अपने ही कल्याण के बारे में लोगों से कोई बात सुनने पर भी उस बात को पवित्र हृदय से ग्रहण नहीं करता। इसलिए उसके जीवन में अथवा संस्कारों में जल्दी परिवर्तन नहीं आता। सरल व्यक्ति का मन साफ होने के कारण उसमें दूसरे दिव्य गुणों की धारणा भी जल्दी हो जाती है जबकि कपटी अथवा चालाक व्यक्ति के जीवन में दिव्य गुणों की धारणा इतनी जल्दी नहीं होती है क्योंकि उसका मन किसी-न-किसी उधेड़बुन में लगा रहता है। वह कभी यह सोचता है कि 'भूतकाल में उस मनुष्य ने मेरे साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया था, अब यह मेरे साथ अच्छाई कैसे कर सकता है? अथवा आज तक फलां मनुष्य ठीक नहीं है, वह भविष्य में भी बदलने वाला दिखाई नहीं देता।' परन्तु जो सरलचित्त व्यक्ति होता है,

(शेष ..पृष्ठ 4 पर)

अमृत-सूची

- शरीर आत्मा का वस्त्र है *(सम्पादकीय)*..... 2
- आओ, विजयी रत्न बनें..... 5
- विश्व रत्न हैं दादी जानकी.....6
- पुरुषोत्तम संगमयुग और.....7
- 'पत्र' संपादक के नाम..... 9
- संकल्प शक्ति.....10
- श्रेष्ठ भाग्य की कहानी.....11
- आबू-अब्बा.. *(कविता)*..... 13
- गहरा गोता *(लघु नाटिका)*.... 14
- धर्म और अध्यात्म.....17
- पवित्रता.....18
- व्यसनों का ज़हर..... 21
- हम आये तुम्हारे..*(कविता)*... 21
- भ्रांतियाँ बकवास सिद्ध हुई... 22
- बचना मेरे दोस्तो *(कविता)*... 23
- मन पर नियंत्रण..... 24
- बोझ देकर हलकी हो गई.... 25
- नारी पहचाने अपने गौरव को.26
- शिव माँ के रूप में..... 27
- सचित्र सेवा समाचार..... 28
- सच्ची शादी हुई भगवान से...30
- सचित्र सेवा समाचार..... 32

सदस्यता शुल्क

भारत	वार्षिक	आजीवन
ज्ञानामृत	75 /-	1,500/-
वर्ल्ड रिन्युअल	75/-	1,500/-
विदेश		
ज्ञानामृत	700 /-	7,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	700/-	7,000/-

शुल्क केवल '**ज्ञानामृत**' अथवा '**द वर्ल्ड रिन्युअल**' के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन-307510 (आबू रोड) राजस्थान।**

- शुल्क के लिए सम्पर्क करें -
09414006904, 09414154383

सम्पादकीय ..✍

शरीर आत्मा का वस्त्र है

हम सभी भगवान के इन महावाक्यों को अच्छी तरह जानते हैं कि शरीर मानवात्मा का कपड़ा है। आत्मा इसे पहनती है और फट जाने पर इसे छोड़ दूसरा ग्रहण कर लेती है अत: भगवान कहते हैं, इस कपड़े में मोह कैसा? कपड़ा (शरीर) चाहे अपना हो या दूसरे का, इसमें मोह रखने से पाप का ही खाता बनता है और आत्मा को देखने से पुण्य की बेल बढ़ती है।

सेकण्ड में देह से नष्टोमोहा

हम प्रतिदिन अपने कपड़ों को अपने ही हाथों धोते हैं। खूब साबुन, सर्फ लगाकर मल-मल कर धोते हैं। हम चाहते हैं, कपड़ा एकदम निखर जाए। यह चाहना ठीक ही है क्योंकि साफ कपड़ा मन को शान्ति और खुशी देता है तथा तन को बदबू, बीमारी से बचाता है पर इस धोने की क्रिया में कपड़े का रंग मद्धिम होता जाता है, तंतु घिसते जाते हैं। एक दिन ऐसा आता है कि हमारा प्रिय कपड़ा हमारे ही हाथों घिसते-घिसते पूरी तरह घिस जाता है। हम उसे फेंक देते हैं। शरीर रूपी कपड़े की भी यही गति है। इसे भी प्रतिदिन नहलाते हैं, मलते हैं। दिन में दो-दो बार भी स्नान कराते हैं। महंगी, सस्ती जैसी भी उपलब्ध हैं, वैसी-वैसी चीज़ों से इसे स्वच्छ करते हैं परन्तु हमारे नहलाते, धुलाते, रोज़ संभाल करते-करते भी यह घिसता जाता है, पुराना पड़ता जाता है, कोशिकाएँ टूटती-फूटती जाती हैं, चमड़ी का कसाव ढीला पड़ता जाता है, झुर्रियाँ आने लगती हैं। संभालते-संभालते भी यह आत्मा का साथ छोड़ता जाता है और एक दिन ऐसा आता है कि आत्मा के लायक नहीं रहता, आत्मा इसे त्याग देती है। काम का था तो आत्मा इसमें घुसी रही, काम का नहीं रहा तो भाग गई। समझदार आत्मा बिना ना-नुकर के जल्दी सेकण्ड में चली जाती है। जो समझदार नहीं है वह (शरीर रूपी) फटे कपड़े के मोह में भी अटकी रहती है, तड़फती रहती है। अंदर ही अंदर सिसकती है। फिर उसे नष्टोमोहा बनाने के लिए प्रयास, प्रार्थनाएँ की जाती हैं। इस प्रकार, शरीर से आत्मा के निकलने की प्रक्रिया, जिसे मृत्यु कहा जाता है, महाकष्टदायक बन जाती है। अत: संसार में जितने भी ज्ञान हैं उनमें सर्वश्रेष्ठ ज्ञान यही है कि आत्मा द्वारा फटे हुए शरीर रूपी कपड़े को बिना ना-नुकर के खुशी से छोड़ दिया जाए, यही ईश्वरीय ज्ञान है। इस ज्ञान की धारणा से ही जन्म होते हुए भी जन्म के दुख और मृत्यु होते हुए भी मृत्यु के दुख से बचा जा सकता है।

सजावट नहीं, सेवा करवाइये

स्थूल कपड़े का रंग वही रहता है जो उसके निर्माता ने चढ़ाया होता है। क्रीम रंग वाले कपड़े पर चाहे कितना भी साबुन घिसाया जाए, वह क्रीम ही रहेगा। ना दुधिया बनेगा, ना आसमानी बनेगा। यदि नील, टिनोपाल या दूसरी महंगी चीज़ों से अल्पकाल का परिवर्तन किया भी जाये तो अगली धुलाई में कपड़ा वैसे का वैसा हो जायेगा फिर रंग बदलने की मेहनत करनी पड़ेगी।

शरीर रूपी कपड़े (त्वचा) का भी अपना-अपना रंग होता है। यह प्रकृति बहुत बड़ी कलाकार है। इसने भिन्न-भिन्न प्रकार के शरीर बनाये हैं। प्रकृति के पास भी नाक, कान, आँख, मुख, हाथ आदि के कितने ही डिज़ाइन हैं जो एक व्यक्ति को लगाने के बाद, दूसरे के लिए भी नया निर्मित हो जाता है। हाथों की उंगलियों के निशान, गले की आवाज़ आदि सभी के भिन्न-भिन्न हैं। यह ज़रूरी भी है। क्यों? नहीं तो चीज़ देंगे राम को, वापस माँगेंगे श्याम से। अपराध करेगा राम, पकड़ लेंगे श्याम को। चमड़ी का रंग बदलने के लिए चाहे कितने भी प्रसाधन शरीर पर घिस लिए जाएँ पर मूल रंग तो जायेगा नहीं, दूसरा चढ़ेगा नहीं। कृत्रिम ढंग से पाउडर, क्रीम, लोशन का लेप चढ़ाया भी जाये तो कितनी देर चढ़ा रहेगा? पानी की एक बूँद, पसीने की एक बूँद

लगते ही लेप बिगड़ जायेगा, पुन: नये सिरे से लगाना पड़ेगा। अत: त्वचा का रंग बदलने की मेहनत बेकार है। जैसे स्थूल कपड़ा शरीर की सुरक्षा के लिए ज़रूरी है उसी प्रकार यह शरीर भी आत्मा के लिए पुण्य की कमाई का साधन है। **इसलिए अध्यात्म कहता है, इसका रंग बदलने या इस पर लेप लगाकर सजावट की चीज़ बनाने के बजाय इसे सेवा में लगाकर समय को और पुण्यों को आबाद करें।**

आसक्त नहीं होना, स्वस्थ रखना है

स्थूल कपड़ा, कई बार, किसी रगड़ से या नुकीली चीज़ से फट जाता है। कई बार ज्वलनशील पदार्थों से उसका नुकसान हो जाता है। इस थोड़े नुकसान के कारण कपड़े को फेंका तो नहीं जा सकता। उस पर चत्ती या टाँका लगाकर इस्तेमाल किया जाता है। इसी प्रकार, छोटी-बड़ी दुर्घटनाओं में शरीर रूपी कपड़ा भी दुर्घटनाग्रस्त होता रहता है। अंग भंग होना, टाँके लगना, किसी कर्मेन्द्री का विकृत होना – यह चलता ही रहता है। अब ऐसे शरीर को आत्मा फेंक तो नहीं सकती पर टाँका, चत्ती लगाकर पहने रखती है। तो जैसे स्थूल कपड़े को संभालना ज़रूरी है, उसी प्रकार शरीर रूपी कपड़े की लंबी आयु हो, निर्विघ्न आयु हो, ऐसी संभाल ज़रूरी है। आसक्ति और सम्भाल दो अलग-अलग चीज़ें हैं। शरीर में आसक्त नहीं होना क्योंकि इसे छोड़ना है पर इसे स्वस्थ रखना है क्योंकि इससे सेवा लेनी है, शरीर ही ईश्वरीय सेवा का माध्यम है।

'नाइट ड्रेस' न बनाइये शरीर को

कई बार खाते समय, कोई चीज़ कपड़ों पर गिर पड़ती है तो दाग लग जाता है। फिर बहुत प्रयास से वह दाग मद्धिम हो पाता है, कई बार नहीं भी होता। कपड़ा बदरंग हो जाता है। सार्वजनिक अवसरों पर हम उसे पहनना छोड़ देते हैं। शरीर रूपी कपड़े के साथ भी ऐसा हो जाता है। अनावश्यक चीज़ें खिला-खिलाकर इसके भी डीलडौल को बिगाड़ लेते हैं, कहीं तोंद निकल आती है, कहीं पाँव मोटे हो जाते हैं, कहीं कमर का लचीलापन खत्म हो जाता है। कई बार मोटापे के बदले इतनी कमज़ोरी आ जाती है कि हवा के झोंके के साथ शरीर हिलने लगता है। ऐसा शरीर, आत्मा के लिए पिंजरा बन जाता है। सार्वजनिक सेवाकार्यों के अनुकूल ना होने के कारण वह भी 'नाइट ड्रेस' बनकर रह जाता है। वह केवल एक ही काम कर सकता है 'आराम'। रूमाल गिर जाए तो उठाने के लिए दूसरा ही चाहिए। अत: ना स्थूल कपड़ों को कुछ खिलाइये, ना शरीर रूपी कपड़े को अनावश्यक खिलाइये और सुलाइये। अध्यात्म कहता है, 'कम खाइये, ग़म खाइये' के सिद्धांत से इसे चुस्त, दुरुस्त बनाइये।

देह-चिन्तन कम, सेवा ज़्यादा

कई लोग (अधिकतर बच्चे), कई बार अपने ही कपड़े से, पहनते-पहनते, बोर हो जाते हैं। कहते हैं, फटता ही नहीं है, फटे तो नया मिले। फिर या तो ब्लेड से काट देते हैं या नदी आदि में नहाते हुए बहा देते हैं या कहीं छिपा भी देते हैं। माँ या किसी अन्य की डाँट या पिटाई के भय से झूठ बोलते हैं क्योंकि उन्हें स्वयं कपड़े की कीमत का ज्ञान नहीं होता।

इसी प्रकार, शरीर रूपी कपड़े की कीमत का भी कई लोगों को ज्ञान नहीं रहता। प्रकृति ने और माँ ने इसे बनाने में कितनी मेहनत की है, वे इसका अहसास नहीं कर पाते और परिस्थितियों से हार मानकर इसे नष्ट कर देते हैं। पर इस तरह से शरीर रूपी कपड़े को नष्ट करने की सज़ा बड़ी भारी है। कपड़े बरबाद करने वाले बच्चे से खफा माँ उसे नये कपड़े न देने की सज़ा दे सकती है। परमात्मा पिता की रची इस सृष्टि का भी विधान ऐसा है कि समय से पहले, अपने ही हाथों, अपने ही शरीर रूपी कपड़े को नष्ट करने वाले को भी बड़ी भारी सज़ा मिलती है। यह सज़ा, कुछ समय बिना शरीर के भटकने के रूप में या विकृत शरीर मिलने के रूप में या अन्य भी किसी रूप में मिल सकती है। **प्रकृति उसी व्यक्ति पर मेहरबान रहती है, परमात्मा की दुआयें भी उसे ही मिलती हैं जो डिटेच भाव से शरीर की**

संभाल करते हुए इसे लंबा चलाता है, अकालमृत्यु के बजाय पूरी आयु प्राप्त करता है और स्वादेन्द्रिय के नियंत्रण, व्यायाम और संयम-नियम के द्वारा शरीर को निरोग रखता है। फिर भी इससे दूरी बनाये रखता है, इसका चिन्तन कम से कम करता है पर इससे सेवा ज़्यादा से ज़्यादा लेता है।

अभ्यास द्वारा देहभान की जकड़ को ढीला कीजिए

कई स्थूल कपड़े अत्यधिक आग, गर्मी के नज़दीक जाने से अपनी आयु खो देते हैं। इसी प्रकार व्यक्ति भी यदि क्रोध, उत्तेजना, बदले की आग, ईर्ष्या-द्वेष की आग, काम की आग, भय के कुहासे, मोह की आँधी या लोभ की दलदल में रहता है तो उसके शरीर रूपी कपड़े की आयु घट जाती है। उपरोक्त स्थितियाँ देह में आसक्ति होने से, देह को मेरा मानने से, स्वयं को देहाकार समझ लेने से बनती हैं। अत: आत्माकार होकर, हर परिस्थिति को ड्रामा की सीन समझकर साक्षी होकर देखने से शरीर को निरोग और शतायु बना सकते हैं।

जैसे बहुत टाइट कपड़ा उतारने में मेहनत लगती है। एक-दो व्यक्तियों के सहयोग से वह कपड़ा शरीर को छोड़ता है। पहनने वाले के शरीर के रोम-कूपों को शुद्ध हवा भी नहीं मिल पाती है, बेचैनी होती है, उठने-बैठने में तकलीफ होती है। इसी प्रकार अपने को देह मानने वाले, देहाभिमान में टाइट रहने वाले लोगों को भी देह से निकलना (न्यारा होना) मुश्किल लगता है। इतने देहभान की जकड़ के कारण आत्मा भी परेशान होती है और संसार रूपी कर्मक्षेत्र पर पुण्य कार्य करने में भी बहुत बाधायें आती हैं। अत: व्यक्ति को चाहिए कि वह बार-बार आत्म-स्थिति के अभ्यास द्वारा देह-अभिमान के संस्कार को ढीला करे। देह से न्यारा होकर परमधाम जाने और आने का अभ्यास करें। इससे शरीर भान की अकड़ ढीली पड़ जायेगी, शरीर उसे बंधन या पिंजरा न लगकर साधन मात्र महसूस होगा। शरीर रूपी दुम के अहसास से वह बोझिल भी नहीं होगा बल्कि मालिक बन जब चाहे इससे सेवा लेगा और जब चाहे इसे उतारकर, इससे न्यारा होकर परमात्मा पिता की मीठी स्मृति में टिक सकेगा। जैसे अबोध बालक के लिए माँ की गोद ही सर्वोत्तम आकर्षण होती है, ऐसे ही ऐसी न्यारी-प्यारी आत्मा के लिए परमात्मा ही परम आकर्षण का केन्द्र रहेगा, वह परमप्रिय परमात्मा से चटकी रहेगी और उसकी स्मृति का मीठा सुख लेते हुए जीवन में रहते भी जीवनमुक्ति का आनन्द लेती रहेगी।

– ब्र.कु. आत्मप्रकाश

सरलता प्रभु को.. पृष्ठ 1 का शेष

वह तो अपनी मस्ती में मस्त रहता है और यही सोचता है कि जैसा कोई करेगा, वैसा पायेगा। वह अपनी सत्यता को किसी भी हालत में नहीं छोड़ता। इसलिए 'सच्चे दिल पर साहिब राज़ी' होने की उक्ति के अनुसार उसे ईश्वर से सहायता भी मिलती है। पुनश्च, उसके सीधेपन, उसकी सच्चाई तथा मन की सफाई के कारण दूसरे लोग भी उसे आशीर्वाद देते तथा उससे स्नेह करते हैं। अत: सरलचित्त मनुष्य अपने आप से संतुष्ट और सुखी रहता है।

सरलचित्त व्यक्ति से लोग न केवल संतुष्ट रहते हैं बल्कि उसमें लोगों का विश्वास बैठ जाता है। वे सरलचित्त व्यक्ति के समीप आना चाहते हैं क्योंकि उसके मन से पवित्रता के वायब्रेशन आते हैं। जो व्यक्ति सरलचित्त न हो, लोग उससे दूर रहते हैं क्योंकि वे सोचते हैं कि यह चालाक व्यक्ति है, न जाने किस स्वार्थ से बात कर रहा है। अत: जो व्यक्ति सरलचित्त नहीं है, उसकी बातचीत में आकर्षण नहीं होता। चालाक और ढोंगी मनुष्य अपना ही स्वार्थ सिद्ध करने की सोचता है परन्तु सरलचित्त मनुष्य कोशिश करता है कि 'मुझ द्वारा किसी को सुख मिल जाये तो यह मेरा भाग्य है।' अत: लोग उससे स्नेह करते हैं और उसकी वाणी में भी एक विशेष प्रकार की मधुरता होती है। ❖

आओ, विजयी रत्न बनें

• दादी जानकी

बाबा ने हम बच्चों को पाँचों विकारों और पाँचों तत्वों पर विजय प्राप्त कराई है। जो गुप्त ही गुप्त अन्तर्मुखी बन बाप को बहुत प्यार और सच्चाई से याद करते हैं, वे विजयी बन जाते हैं।

बाबा कहते, बच्चे, तुम ब्राह्मणों की चलन और बोलचाल बहुत रॉयल और सात्विक होनी चाहिए। रॉयल चलन वालों की कहाँ भी आँख नहीं डूबती। वे परदोष से मुक्त रहते हैं। उन्हें कोई का दोष दिखाई नहीं देता। अंदर ही अंदर अपने आपको देखते और अपने को ही परिवर्तन करते हैं।

सतोप्रधान बनने के लिए बहुत-बहुत परहेज से चलना है, अपना खानपान, बोलचाल सब सात्विक रखना है। सात्विक माना ही सतोप्रधान। अंदर-बाहर समान हो। कथनी-करनी-रहनी सब एक जैसी चाहिए। अंदर एक, बाहर दूसरा रूप न हो। सबको सुख देते, सबकी आशीर्वाद लेते चलो।

कोई भी सेवा करो, स्वयं, स्वयं से संतुष्ट रहो। कभी भी सेवा करते उदासी न आये। अगर स्वयं संतुष्ट हैं, श्रीमत प्रमाण सेवा की तो सफलतामूर्त बन गये। स्टूडेन्ट बढ़े या नहीं बढ़े लेकिन आपके हिसाब-किताब में जमा हो गया और उन्हें संदेश मिल गया इसलिए सदा संतुष्ट रहने की आदत डाल लो। असंतुष्टता का नाम-निशान भी न हो तो संतुष्टता का वायुमण्डल बन जायेगा, यह बहुत अच्छी सेवा है।

रोज़ अपनी बैटरी को ज्ञान-योग से चार्ज करना है। आपस में ज्ञान की गहरी रूहरिहान ज़रूर करनी है। यह उन्नति का बहुत अच्छा साधन है। हम आत्मा भाई-भाई हैं, फिर प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे भाई-बहन हैं, यह अंदर से इतना पक्का हो जो दैहिक दृष्टि बदल जाये। देह दिखाई ही न दे। हमारा बाबा सर्व धर्म आत्माओं का पिता है, ग्रेट ग्रेट ग्रेण्ड फादर है, उसी नशे और संबंध से देखो तो सब अपने लगेंगे। वैर भाव, घृणा, द्वेष सब दूर हो जायेंगे।

संगम का यह समय बहुत-बहुत वैल्युएबल है, कभी हद के संसार की बातों में अपना समय वेस्ट नहीं करना है। सदा रूहानी नशे में रहना है। कभी कोई मिथ्या अहंकार न आये। अंदर में कोई भी लूनपानी अथवा खारेपन का संस्कार न हो। अंदर बाहर की बड़ी सफाई चाहिए। एक बाप से सच्चा लव रहे, किसी भी देहधारी में बुद्धि अटकी अथवा लटकी न हो। एक बाबा के सिवाय दूसरा कोई भी प्रभावित नहीं कर सकता। एक के प्रभाव में रहना है, एक के गुण गाने हैं।

जैसे हमारे पूर्वजों (आदिरत्नों) के चेहरे सदा चमकते हैं, ये सभी सदा एक के होकर रहे हैं। बाबा का कहना और इनका करना, कभी उसमें अपनी मत एड नहीं की। तीन बातें सदा ध्यान पर रखी –

- सदा संग की संभाल रखी। किसी के संग का रंग इन पर नहीं लगा। अपना रूहानी रंग सबको लगाया।
- सदा पिताव्रता और पतिव्रता बनकर रहे। किसी में भी, कहाँ भी आँख नहीं डूबी।
- बाबा ने जो कहा, वही किया। कभी उसमें अंश मात्र भी संशय नहीं आया, तब संगम पर गायन योग्य बन गये।

बाप के दिल को जीतना है तो बाबा से कुछ भी छिपाओ नहीं। जो हूँ, जैसी हूँ, बाबा आपकी हूँ। अविनाशी सर्जन को अपनी बीमारी सुनायेंगे तो

दवाई मिल जायेगी इसलिए कभी डरो नहीं। बाबा से और बाबा ने जिन्हें निमित्त बनाया है, उनसे बहुत हलके रहो। बाबा की जो शिक्षायें मिलती हैं यही उनकी दया, कृपा, आशीर्वाद है इसलिए शिक्षाओं को संभालकर रखो। कभी नहीं सोचो कि यह जो शिक्षा मिली, यह फलाने के काम की है, उसे अपने लिए समझकर समा लो तो वह समय पर काम आयेगी।

करावनहार बाबा सब कुछ आपेही कर रहा है, करा रहा है। यह प्रभु लीला चल रही है। जो उसे कराना है, वह करा लेगा। मुझे कभी कर्त्तापन का भान न आ जाये। मैं करता हूँ, मैंने किया.. यह मैंपन आया तो माया की चमाट लगी। ऊँची मंज़िल है, बहुत संभालकर चलना है। एक-दो को सावधान कर उन्नति को पाना है। यही बहुत अच्छी विधि है, एक-दो को सावधान करो भी और स्वयं सदा सावधान रहो भी।

तो आओ, हम सभी मिलकर बाबा की एक-एक शिक्षा को अपने जीवन में उतारकर विजयी रत्न बनें और विजयी माला में पिरोकर सच्ची विजयदशमी मनायें। सेवायें तो सब हुई पड़ी हैं, हम अपनी ऊँची स्थिति में स्थित रहें तो हमारी एकरस, अचल, अडोल स्थिति से सबको बाबा दिखाई देगा। यही बापदादा को प्रत्यक्ष करने का अच्छा साधन है। ❖

विश्व रत्न हैं दादी जानकी

जयशंकर मिश्र 'सव्यसाची', सह-संपादक, 'योग संदेश', हरिद्वार

भारत महापुरुषों और महान विदुषियों का देश है जिन्होंने समय-समय पर यहाँ जन्म लेकर भारत सहित संपूर्ण विश्व को नई दिशा व ज्ञान से ओत-प्रोत किया है। सीता, सावित्री, राधा, अपाला, गायत्री तथा मदालसा की कड़ी में दादी जानकी भी एक महत्त्वपूर्ण कड़ी हैं जिनके द्वारा सिखाये जा रहे राजयोग और ईश्वरीय ज्ञान मुरली से भारत सहित 133 देशों की आत्मायें लाभान्वित हो रही हैं।

दादी जी वास्तविक अर्थों में विश्व-रत्न हैं। भारत सरकार को अभी भले ही यह बात समझ में न आये परंतु वह दिन दूर नहीं जब भारत सरकार दादी जी को 'भारत-रत्न' से अलंकृत कर स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करेगी। दादी जी का हृदय बाल्यकाल से ही ईश्वरीय प्रेम से ओत-प्रोत था। ईश्वर की सत्य अनुभूति पाकर छोटी आयु में ही आपने ब्रह्माकुमारीज़ में अपना जीवन समर्पित कर दिया। पथभ्रष्ट, अशांत, पीड़ित मानवता की सेवा के लिए देश और विदेश में आप अथक होकर सेवा कार्य कर रही हैं। भिन्न संप्रदायों, धर्मों में बँटे लोगों को एक परमात्मा की संतान बताकर एकता, मानवता तथा एक ईश्वरवाद का पाठ पढ़ाने में आप 93 वर्ष की आयु में भी अनवरत पुरुषार्थरत हैं। ❖

ग्लोबल हॉस्पिटल में महत्त्वपूर्ण चिकित्सा सर्जरी कार्यक्रमों की जानकारी

घुटने व कूल्हे के जोड़ प्रत्यारोपण सर्जरी सुविधा
(Regular Knee and Hip Replacement Surgery)
दिनांक : 5 से 8 नवम्बर 2009
29 से 31 दिसंबर 2009 एवं 1, 29, 30, 31 जनवरी 2010
सर्जरी : डॉ. नारायण खण्डेलवाल, मुम्बई से कुशल व अनुभवी सर्जन
(Trained in U.K., Australia and Germany)
पूर्व जाँच के लिये केवल घुटने व कूल्हे के ऑपरेशन के इच्छुक रोगी संपर्क करें –
डॉ. मुरलीधर शर्मा, ग्लोबल हॉस्पिटल, फोन नं. 09413240131
फोन नं. : (02974) 238347/48/49 **फैक्स** : 238570
ई-मेल : ghrcabu@gmail.com
वेबसाइट : www.ghrc-abu.com

पुरुषोत्तम संगमयुग और शिव परमात्मा के परमशिक्षक रूप के दिव्य कर्त्तव्य

• ब्रह्माकुमार रमेश शाह, गामदेवी (मुंबई)

हम सब सौभाग्यशाली आत्मायें हैं कि हमें संगमयुग में शिव परमात्मा के तीन मुख्य स्वरूप और संबंध – परमपिता, परमशिक्षक और परमसतगुरु का न सिर्फ ज्ञान होता है किन्तु अनुभव भी होता है। परमसतगुरु के रूप में हम सबको गति, सद्गति अर्थात् मुक्ति और जीवनमुक्ति की राह प्राप्त होती है। परमपिता के रूप में हम सबको पिता का प्यार भी मिलता है और हम वर्से के अधिकारी भी बनते हैं। परमशिक्षक के रूप में वे हमारी प्रचलित मान्यताओं में क्रांतिकारी परिवर्तन करते हैं और नये ईश्वरीय ज्ञान में हमारी आस्था और विश्वास निर्माण कराकर उसे जीवन में धारण करने की शक्ति और बल प्रदान करते हैं।

शिव पिता का परमपिता और परमसद्गुरु के रूप का कर्त्तव्य और संबंध हम सबके सामने बहुत स्पष्ट है किन्तु परमशिक्षक के रूप में उनके कर्त्तव्यों की विस्तार से समझ नहीं मिली है। इसी कारण कभी-कभी कइयों के मन में प्रश्न उठते हैं। मिसाल के तौर पर, कइयों के मन में यह प्रश्न उठता है कि शिव बाबा ने सारा ज्ञान एक ही साथ क्यों नहीं दिया, अलग-अलग समय पर धीरे-धीरे क्यों दिया। कई बार समझ में फर्क हो जाने के कारण ज्ञान के असली सिद्धांत को सापेक्ष रूप में हम नहीं समझ सकते जैसे कि कहा जाता है कि एक बार प्रसिद्ध वैज्ञानिक आइंस्टाइन एक अंधे को दूध के बारे में बता रहे थे, अंधे ने समझा नहीं तो पूछा, दूध कैसा होता है? आइंस्टाइन ने कहा, सफेद होता है। उसने फिर पूछा, सफेद क्या होता है? आइंस्टाइन ने कहा, बगुले जैसा होता है। अंधे ने पुन: पूछा, बगुला कैसा होता है, आइंस्टाइन ने कहा, जिसकी गर्दन मुड़ी हुई होती है और उन्होंने अंधे को हाथ मोड़कर स्पर्श कराया। तब अंधे ने कहा, अच्छा, अब मैं समझा कि दूध वह चीज़ है जो बगुले की गर्दन की तरह मुड़ा हुआ होता है। इसी तरह बाबा के ज्ञान के कई सिद्धांतों को हम उसी रूप से नहीं समझ सकते इसलिए बाबा को कहना पड़ता है, मैं जो हूँ, जैसा हूँ, ऐसा बहुत कम लोग मुझे पहचान सकते हैं।

कहावत है कि लड्डू को चींटियों के ऊपर रख दें तो चींटियाँ दब जायेंगी किन्तु अगर चूरा बनाकर रखा जाये तो चींटियाँ उससे पेट भर सकती हैं। इसी प्रकार, शिव बाबा ने सारा ही ज्ञान एक साथ दे दिया होता तो हम लोग समझ नहीं सकते थे और नये लोगों को भी सीधा ही ज्ञान सुनाते तो उन पर विपरीत असर होता।

मैंने अपने एक मित्र को ईश्वरीय ज्ञान लेने के लिए सेवाकेन्द्र पर भेजा था। बहन ने बिना किसी भूमिका के ज्ञान देना शुरू किया और सीधा ही प्रश्न पूछा, आपके कितने बाप हैं? तो मेरा मित्र मूंझ गया और चुप रहा, उसके मन में आक्रोश आया कि ऐसा सवाल बहन मुझसे क्यों पूछती है? दो मिनट के बाद बहन ने बताया कि आपके दो पिता हैं, फिर तो मित्र को बहुत क्रोध आ गया। मित्र ने कहा, रमेश भाई, अगर मेरे सामने कोई भाई बैठा होता तो मैं उसको दो चमाट लगा देता। फिर बहन ने समझाया – एक आपके लौकिक पिता हैं और दूसरे आपके पारलौकिक पिता परमात्मा हैं जिसके लिए आप मंदिर में गाते हैं, तुम मात-पिता हम बालक तेरे। तब मित्र को सब समझ में आया और क्रोध शान्त हुआ।

ऐसा ही मेरे जीवन का अनुभव है। जब मेरी लौकिक शादी हुई तब साकार ब्रह्मा बाबा मुंबई में थे। मेरी लौकिक माता, ऊषा जी को प्यारे ब्रह्मा बाबा से मिलाने के लिए ले गईं। ब्रह्मा बाबा ने ऊषा जी से सीधा प्रश्न पूछा कि गीता का भगवान कौन है? ऊषा जी को तो ईश्वरीय ज्ञान का कुछ भी मालूम नहीं था, उन्होंने कह दिया,

गीता का भगवान श्री कृष्ण है। जब ब्रह्मा बाबा ने कहा कि गीता का भगवान शिव है तो ऊषा जी ने काफी बहस करना शुरू कर दिया और बाद में भी इस बहस के लिए उनसे चार-पाँच बार मिलने गई। मुंबई से वापस जाने का कार्यक्रम बना तब ब्रह्मा बाबा ने ऊषा जी से कहा, बच्ची, आप आबू में आना, वहाँ पर हम चर्चा करेंगे कि गीता का भगवान कौन है। ऊषा जी ने स्पष्ट रूप में ब्रह्मा बाबा को कहा, मैं आने के लिए तैयार हूँ और आपको जो यह भ्रांति है कि गीता का भगवान शिव है, उसे झूठ सिद्ध कर बताऊँगी। तब ब्रह्मा बाबा ने कहा, बच्ची, आबू में आना फिर देखेंगे किसको भ्रांति है। ऊषा जी ने कहा, बाबा, यह आपको ही भ्रांति है, इसका मुझे सौ प्रतिशत विश्वास है। बाद में ऊषा जी को भी निश्चय हो गया कि गीता का भगवान शिव ही है।

तीसरा मिसाल है, मुंबई में रजनी नाम की एक सिन्धी माता आती थी। एक दिन ब्रह्मा बाबा ने मुरली क्लास में पूछा कि गीता का भगवान शिव है, ऐसा कौन मानता है? सभी ने हाथ उठाया सिर्फ रजनी माता ने नहीं उठाया। ब्रह्मा बाबा ने पूछा तो उसने कहा, बाबा, मैं मर जाऊँगी पर गीता का भगवान शिव है, यह नहीं मानूँगी। तब ब्रह्मा बाबा ने कहा, बच्ची, जितनी बातें तुम्हें जँचती हैं, उन्हें स्वीकार कर ज्ञान-मार्ग में चलती रहो, आगे चलकर तुमको सब बातें समझ में आ जायेंगी। तीन-चार साल के बाद जब मैं मुरली क्लास करा रहा था तब मैंने वही प्रश्न क्लास में पूछा। सबने हाथ उठाया और उनमें वो रजनी माता भी थी। मैंने पूछा, माता जी, आप कब से गीता का भगवान शिव को मानने लगी, आपने तो ब्रह्मा बाबा के सम्मुख कहा था कि मैं मर जाऊँगी परन्तु गीता का भगवान शिव है, ऐसा नहीं मानूँगी। उसने इतना ही कहा कि मुझे मालूम नहीं, कब मेरी मान्यता में फर्क आया।

हम सब भी रजनी माता जैसे ही हैं। हम सबने भक्ति मार्ग में विभिन्न धर्मों की विभिन्न बातें सुनी हुई थीं और हमारी उन सभी मान्यताओं में धीरे-धीरे परिवर्तन आया। इस परिवर्तन के बारे में अगर अंतर्मुखी बनकर सोचें तो हमें याद भी नहीं होगा कि कब हमारी पुरानी मान्यतायें खत्म हुईं और हमारा दृढ़ विश्वास ईश्वरीय ज्ञान की नई मान्यताओं में हुआ। यह जो परिवर्तन हमारी मान्यताओं में हुआ, इसका मुख्य कारण यही है कि शिवपिता ने परमशिक्षक के रूप में ज्ञान के सभी रहस्य एक साथ नहीं खोले बल्कि क्रमबद्ध तरीके से खोले।

एक और मिसाल है, सन् 1957 में ईश्वरीय विश्व विद्यालय के बारे में जनसाधारण में मान्यता थी कि ये लोग घर-बार छुड़ाते हैं और घर से भगा देते हैं। ब्रह्मा बाबा मुंबई आये हुए थे। मेरे एक संबंधी से हमने चर्चा की तो उन्होंने कहा, जैन धर्म वालों ने दीक्षा समारंभ के रूप में, जैसे शादी का महोत्सव होता है, वैसे करना शुरू किया इस कारण किसी को यह संकल्प नहीं उठता है कि ये घर-बार छुड़ाते हैं तो आप भी ईश्वरीय जीवन को धारण करने की प्रक्रिया का महोत्सव मनाइये। हमने ब्रह्मा बाबा को यह बात कही तो ब्रह्मा बाबा ने कहा कि हम ऐसा समर्पण समारोह करेंगे जिसमें कन्या के माँ-बाप स्वेच्छा से कन्या को ईश्वरीय सेवा के लिए समर्पित करें और कन्या भी अपने मुख से कहे कि मैंने यह पवित्र जीवन पद्धति अपनाई है, ऐसा करने से रिश्तेदारों की यह भ्रांति दूर हो सकती है। बाद में ब्रह्मा बाबा ने अमृतसर में पहला-पहला समर्पण समारोह कराया और लोगों की भ्रांति दूर हुई। एक बार राजस्थान के तात्कालिक राज्यपाल भ्राता एम. चेन्नारेड्डी जब माउंट आबू के ओम शान्ति भवन में दो बहनों का समर्पण समारोह देख रहे थे तो उनको यह समारोह इतना अच्छा लगा कि उन्होंने बाद में राजभवन जाकर दस हज़ार रुपये भेजे और चिट्ठी लिखी – 'जैसे कन्या की शादी होती है तो रिश्तेदार कन्या को सौगात देते हैं। ऐसे ही आज इन दो कन्याओं का समर्पण हुआ, उसमें मैं उनके बड़े भाई के नाते सौगात रूप में यह धन भेज रहा हूँ।' इस प्रकार से तर्कयुक्त रीति से जब ज्ञान सुनाते हैं तो लोग समझ जाते हैं और ईश्वरीय ज्ञान में श्रद्धा निर्माण होती है।

(क्रमश :)

'पत्र' संपादक के नाम

जुलाई, 09 अंक में 'आत्मा को उजला करने वाला है शिव बाबा' लेख पढ़कर बेहद खुशी हुई। विज्ञान द्वारा हुई प्रगति ने मानव को साफ-सुथरा रहने के तरीके दिए हैं लेकिन आत्मा को शुद्ध करने वाला एक ही परमात्मा है। लेख में आत्मा रूपी कपड़े को भिगोने, सटका लगाने, रगड़ने, व्यवहार व परमार्थ के हाथों से निचोड़ने, ज्ञान-सूर्य की धूप में सुखाने, प्रेस करने और परमधाम रूपी अविनाशी शोकेस में लगा देने की संपूर्ण विधि बताई गई है और विशेषता यह है कि ये सब कार्य नि:शुल्क हैं।

आपने कितने भी गंदे, दाग-धब्बे वाले आत्मा रूपी कपड़े को इतने ऊँच अविनाशी शोकेस तक पहुँचाने का अति सहज सरल मार्ग बताया। सभी आत्मायें धुलाई की इस अनोखी विधि से पावन बन जायें, यही दिल की आश है। चातक पंछी जैसे बारिश की बूंदों की राह देखता है, ऐसे मैं भी ज्ञानामृत की आतुरता से राह देखती हूँ।

– ब्र.कु. छाया, बार्शी

ज्ञानामृत पत्रिका शिव बाबा के बाद दूसरे नम्बर की सच्ची-सच्ची मित्र है। हर लेख से सीखने को मिलता है। जुलाई के अंक में छपा लेख 'जीभ प्रबंधन' बहुत ही धारणा योग्य है। लेखक ने ऊर्जा, समय, संकल्प व श्वास के महत्त्व को बहुत अच्छे ढंग से लिखा है। 'व्यसन – मौत की शहज़ादी को निमंत्रण' लेख समाज व देश के कल्याण में बहुत सफल होगा। व्यसन के शौकीन अगर इस लेख को पढ़ें तो अवश्य सुधर जायें। व्यसन करने वालों के लिए यह लेख अमृत समान कीमती है।

– शम्भू दयाल, जयपुर

जुलाई 09 अंक पढ़ने के उपरांत ऐसा महसूस हुआ कि यह केवल एक आध्यात्मिक पत्रिका का अंक न होकर संपूर्ण मनोचिकित्सा तथा जीवन प्रबंधन का बेजोड़ लेखा-जोखा है। इसका एक-एक लेख बहुमूल्य है। उनसे मिलने वाली सीख से लगता है कि यह सीख किसी साधारण लेखक की न होकर निश्चित ही ईश्वरीय शक्ति की है जो लेखक की लेखनी को माध्यम बनाकर उससे लिखवाई जा रही है। शब्दों का चयन ऐसे किया गया है मानो किसी बीमार व्यक्ति को अंतिम समय दी जाने वाली जीवन रक्षक दवाइयों की खुराक हो जो सीधे और शीघ्र ही हृदय की गहराइयों में जाकर नवीन चेतना का संचार कर देती है।

– सुनील शिवहरे,
जबलपुर (कटंगा)

ज्ञानामृत पत्रिका अध्यात्म एवं ईश्वरीय ज्ञान से भरपूर है। अध्यात्म सदियों से समाज को नकारात्मक वृत्तियों से दूर रख स्नेह, शांति और समरसता जैसे मूल्यों के सहारे एकता के सूत्र में बाँधने में मददगार रहा है। पत्रिका से प्रेम, दया, शुद्ध खान-पान, पवित्र जीवन जीने की कला समाज को मिल रही है। यह पत्रिका कवि के इस दोहे को साकार कर रही है –

'सात खण्ड नौ दीप तक
सतगुरु डारी डोर,
डोर पकड़ नर न चढ़े
तो सतगुरु का खोर।'

यह शिवबाबा की डोरी है, इसे अपनाकर जीवन को धन्य बनायें एवं स्वयं पढ़कर, पुरानी पत्रिकाओं को बाँटकर अपना भाग्य बनायें।

– ब्र.कु. मनोहर, शहपुरा भिटौनी

सितंबर 09 के अंक में 'क्षमा वीरस्य भूषणम्' लेख पढ़ा। वर्तमान परिस्थितियों में क्षमा का मूल्य समझाने वाला उत्तमोत्तम विचारों से यह लेख भरा हुआ है। ज्ञानामृत एक बड़ा सागर है। इसमें व्यक्त विचार, लेख सामग्री प्रत्येक व्यक्ति के लिए नया जीवन पाने में उत्तम बनी रहे, ऐसी शुभकामनायें!

– ललित गज्जर, कड़ी (गुजरात)

दूसरों के चिन्तन में समय बर्बाद करने की बजाय अपने आप से बातें करके अपना सुधार करो।

संकल्प शक्ति

• ब्रह्माकुमार बद्री विशाल, त्रिपाठी नगर, लखनऊ

सभी मनुष्य हर समय कुछ न कुछ संकल्प करते रहते हैं। नींद में चले जाने पर भी, नींद में जाने से ठीक पहले किये गये विचार आते रहते हैं। जिस प्रकार के संकल्प करते हैं उसी प्रकार का दृश्य सूक्ष्म मानस पटल पर दिखाई देता रहता है। जितना ही हम अपने किसी संकल्प को दृढ़तापूर्वक धारण कर पोषित करते रहते हैं, उतना ही उस संकल्प के समय दिखाई देने वाला दृश्य स्थूल रूप धारण करते हुए हमारे नजदीक आने लगता है। कई बार लोग कहते हैं, 'मैं चाहता तो नहीं था लेकिन हो गया'। 'चौथ का चांद देखना है' या 'चौथ का चांद नहीं देखना है', दोनों ही संकल्पों में चांद का ही दृश्य दिखाई देता है। 'क्रोध करना है' या 'क्रोध नहीं करना है', दोनों प्रकार के संकल्पों में क्रोध का ही दृश्य मानस पटल पर आता है। इसलिए यदि क्रोध नहीं करना है तो यह संकल्प करें कि 'मुझे शान्त स्वरूप रहना है'। जो नहीं करना है उसके विचार ही न उत्पन्न करें, जो नहीं बनना है उसका संकल्प ही न करें बल्कि आप स्वयं को जैसा बनाना चाहते हैं वैसा ही दृढ़ संकल्प और दृश्य उत्पन्न करें। फिर यह शिकायत खत्म हो जायेगी कि करना तो नहीं चाहता हूँ लेकिन हो जाता है।

अपनी फ्रिक्वेन्सी चेक करें – टी.वी. पर अपना मनपसंद कार्यक्रम देखने के लिए सही फ्रिक्वेन्सी सेट करनी पड़ती है। हम भी अपना जीवन जिस प्रकार बनाना चाहते हैं अथवा जिस प्रकार के समाज का निर्माण करना चाहते हैं अपने विचारों की वही फ्रिक्वेन्सी दृढ़तापूर्वक सेट कर दें। **विश्वास करिये, जीवन वैसा ही बनेगा जैसा हम चाहते हैं। हम अपने जीवन में जो कुछ बदलना चाहते हैं वह बदल सकते हैं। सिर्फ अपने विचार बदलकर, चैनल और फ्रिक्वेन्सी बदल दें। यदि हम दूसरों की कमज़ोरी का चिन्तन करते रहेंगे तो एक दिन वह कमज़ोरी हमारे जीवन का अंग बन जायेगी। यदि हम दु:ख के विचार उत्पन्न करते रहेंगे तो चारों ओर से दु:ख के विचार हमारे पास आते जायेंगे और हम अति दु:खी हो जायेंगे। लेकिन जब हमारे मन में खुशी के विचार उत्पन्न होते हैं तो संपूर्ण ब्रह्माण्ड से खुशी की तरंगें हमारी ओर आकर्षित होती हैं** और कई बार उन तरंगों से निकली खुशी के गीतों की लाइनें हम मन ही मन गुनगुनाने लगते हैं।

सब कुछ संभव है

उच्च संकल्प शक्ति के बल से ही एक मछुआरे का बेटा देश का राष्ट्रपति बन सकता है, धीरूभाई अंबानी पैट्रोल पम्प के नौकर से अनेकों पैट्रोल पम्पों के मालिक बन सकते हैं, एक साधारण व्यक्ति से बिड़ला जी देश के बड़े उद्योगपति बन सकते हैं, एक साधारण खलनायक सुपर स्टार बन सकता है, एक साधारण व्यक्ति राष्ट्रपिता बनता है। एक विद्यार्थी जब डॉक्टर बनना चाहता है तो वह डॉक्टर बनने का दृढ़ विचार रखता है और उसी दृश्य को निरंतर देखता रहता है तभी वह डॉक्टर बन पाता है। इंजीनियर बनने वाला इंजीनियर बनने तथा जज बनने वाला जज बनने का दृढ़ संकल्प करता है और उसी प्रकार की शक्तियों को अपनी ओर आकर्षित करता है। पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम जी युवाओं को संबोधित करते हुए प्राय: यह बात कहते हैं कि 'ऊँचे-ऊँचे सपने न देखना, यह अपने साथ अन्याय करना है।'

अभी तक सभी लोग यही बताते रहे हैं कि सदैव अच्छा सोचो, अच्छा कार्य करो, अच्छे बनो। किन्तु किसी ने यह नहीं बताया कि कितना अच्छा सोचो, कितने अच्छे कार्य करो और कितने ऊँचे बनो। अब स्वयं परमपिता परमात्मा ने आकर ईश्वरीय विश्व विद्यालय के माध्यम से यह स्पष्ट लक्ष्य

(शेष पृष्ठ 13 पर...)

श्रेष्ठ भाग्य की कहानी

• ब्रह्माकुमार सूर्य, आबू पर्वत

सन् 1968 में साकार ब्रह्मा के द्वारा हम अपने प्राण-निधान परमपिता शिव बाबा से मिले। साकार में इस धरा पर अवतरित बिछुड़े बाप और बच्चे का यह प्रथम मिलन था। इस मिलन से मन इतना आनन्दित व भरपूर हुआ कि उसमें आवाज़ उठने लगी – 'जीवन की सार्थकता यही है कि भगवान के साथ ही यह व्यतीत हो।' यह सच्चे दिल की आवाज़ थी और सच्चे दिल की कामना कभी भी अपूर्ण नहीं रहती। सन् 1968 के अंत में बाबा ने इस जीवन को अपनी सेवाओं के लिए स्वीकार कर लिया।

स्वयं भगवान ने जिसका आह्वान किया

मुझे पता चला कि मेरे मन में बचपन से ही वैराग्य के बीज किसने बोये, मुझे किसने संसार से विरक्त रखा और किसने ज्ञान लेते ही 'महान योगी' बनने की प्रेरणा मेरे चित्त में भर दी। वे थे स्वयं भगवान और प्रजापिता ब्रह्मा जिन्हें किसी ऐसी आत्मा की आवश्यकता थी जो योगयुक्त ब्रह्मा-भोजन बना सके और उनकी नज़र पड़ी मुझ पर तथा उन्होंने यज्ञ में इस आत्मा का आह्वान किया।

जिसका आह्वान स्वयं भगवान ने अपने महान कार्य के लिए किया हो, उसे कितना गर्व होगा स्वयं पर और उसे कितना बल प्राप्त हुआ होगा – यह तो इस जीवन की एक अत्यंत सुन्दर गाथा है जिसका वर्णन करना यहाँ सम्भव नहीं। मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि स्वयं भगवान ने ही मुझे 'योगी भव' का वरदान दिया और यह वरदान उनकी प्रथम दृष्टि से ही मुझे प्राप्त हो गया था। परन्तु कहानी वरदान तक ही समाप्त नहीं हो जाती, उन्होंने मेरे मन में निरंतर योगी बनने की इतनी दृढ़ अभिलाषा व उमंग भर दी जिसकी आज कल्पना भी कठिन है। सन् 1970 जनवरी तक ही, जबकि ब्रह्मा बाबा का प्रथम स्मृति दिवस आया, मैं अपने लक्ष्य में पूर्ण सफल था।

मुझे ब्रह्मा-भोजन बनाने की सेवा मिल चुकी थी। यद्यपि इस कार्य को लोग छोटी सेवा समझते थे और करने वालों को भी साधारण ही समझते थे परन्तु मैं इन सबसे विचलित नहीं होता था। मैं तो यह सोचता था कि जिसे लोग निम्नकोटि की सेवा कहते हैं, वही करते हुए मैं संसार के समक्ष आदर्श प्रस्तुत करूँगा ताकि देखने वाले देखते ही रह जाएँ और वे समझ सकें कि सेवा कोई भी छोटी-बड़ी नहीं होती। मेरे पास तो यही श्रेष्ठ इरादा था कि जिसने मेरे मन की हर आवाज़ पूरी की, मुझे भी हर कीमत पर उसकी आशाओं के दीप जलाने हैं। और यह संकल्प पूर्ण हुआ उन्हीं के सहयोग से। मैं गर्व से कह सकता हूँ कि भोलानाथ के महान भण्डारे ने ही मुझे योगी बनाया। मैंने भी जी भरके, सच्चे दिल से, निरसंकल्प रहकर सेवायें कीं ताकि मेरे मन का कोई भी अरमान शेष न रह जाये।

इसी मध्य मुझे अव्यक्त बापदादा का निर्मल स्नेह व सम्मान प्राप्त हुआ। कई बार उन्होंने मुझे कहा – 'बच्चे ने बाप की इच्छा पूरी की है, और भी बाप की कई इच्छायें हैं जो तुम्हें पूरी करनी हैं।' वाह! भगवान की इच्छायें पूरी करने वाले हम .. नशा आसमान छूने लगा और दिल में प्रतिज्ञा की – 'बाबा, हम बीसों नाखूनों का ज़ोर लगाकर आपकी प्रत्येक प्रेरणा को पूर्ण करेंगे।' जबकि हमें अनुभवों से यह अच्छी तरह ज्ञात है कि करनकरावनहार तो वह स्वयं ही है, उसे तो चाहिए दिल की सच्चाई, दिल की उमंगें व मन की दृढ़ता।

यज्ञ में भोलानाथ के भण्डारे में सेवा करते हुए और योग के विभिन्न अनुभव करते हुए मुझे यह अनुभव सदा ही रहा कि भण्डारे पर भगवान की नज़र है और वह सदा ही यहाँ अपनी छत्रछाया लगाये रहता है। इसलिए और किसी स्थान की अपेक्षा यहाँ पर योगाभ्यास करना अति सरल था। मुझे योग के भिन्न-भिन्न चार्ट लिखने का शौक था जिन्होंने योग में

सदा ही रस भरे रखा। मैं योग में इतना मगन हो गया कि जीवन में योग व सेवा के अतिरिक्त कुछ भी न रहा परन्तु एक शक्ति का अभाव रहा और वह थी मनन-शक्ति।

मनन-शक्ति वरदान रूप में प्राप्त हुई

सन् 1972 में अव्यक्त बापदादा के द्वारा मुझे मनन करने की प्रेरणा प्राप्त हुई और मनन के महत्त्व का बोध हुआ। मुझे लगा कि मानो वे हर बात में मुझे पूर्ण बनाना चाहते हैं। उनके कहने से मुझे मनन का अनुभव वरदान रूप में हुआ। मैंने ईश्वरीय सहयोग का लाभ उठाते हुए प्रतिदिन एक विषय पर एक-दो पेज लिखने शुरू किये और इस प्रकार लगातार सौ विषयों पर लिखने से ज्ञान-बल के सुन्दर अनुभव हुए और अहसास हुआ कि बिना मनन-शक्ति के योग-शक्ति अपूर्ण रह जाती है।

मनन से कई कमज़ोरियाँ जैसे भय, फीलिंग, भावुकता समाप्त होकर शक्ति रूप में बदल गई। जीवन में नवीन चिन्तनधारा का आगमन हुआ और आगे चलकर मैंने जान लिया कि मनन-शक्ति ही निरन्तर योगयुक्त रहने का आधार है और इसके द्वारा ही हम विघ्नों को हँसते-हँसते पार कर सकते हैं। अब मेरे जीवन में मनन व योग का संतुलन हो गया और मन अत्यधिक आनन्दित व मगन रहने लगा।

इसके बाद मेरा ध्यान गया अडोलता की ओर। मैं चाहता था कि कोई भी बात, कोई भी परिस्थिति, किसी के शब्द या व्यवहार मुझे विचलित न करें। मुझे याद है कि बाबा की शक्तिशाली ज्ञान की बातों के द्वारा मैंने पाँच वर्षों तक लगातार अडोल रहने का पुरुषार्थ किया, वह पुरुषार्थ था ज्ञान के प्रयोग द्वारा निर्लिप्त रहने का। मेरे जीवन में शारीरिक व्याधियों के विघ्न अधिकतर आये परन्तु योग व मनन के सुन्दर अनुभवों के कारण कभी भी न तो वे मुझे विघ्न लगे और न मेरी स्थिति हलचल में आई बल्कि मैं जानता हूँ कि व्याधियाँ सदा ही मेरे लिए वरदान बनकर आईं।

इन व्याधियों में ही भगवान से मेरी दोस्ती हुई और जब से इस जीवन में भगवान दोस्त बनकर आये, अनुभवों का एक नया दौर शुरू हुआ। उसने मुझसे पूरी दोस्ती निभाई, मेरी हर पुकार सुनी और मैंने भी उससे दोस्ती निभाने का संपूर्ण प्रयास किया।

मैंने स्वयं के लिए नियम बनाये

मुझे बचपन से ही प्रतिज्ञा करने का शौक था। मैंने स्वयं के लिए कुछ नियम बनाये और उन पर चलने की प्रतिज्ञा की। प्रतिज्ञा करते ही मुझे यह अहसास हुआ कि बाबा ने मुझे सभी प्रतिज्ञाएँ पूर्ण करने का बल दे दिया हो। मैं सभी नियमों को सरलता से निभाता आया। वे नियम कुछ इस प्रकार थे –

- मैं सदा हर तरह से सभी को सहयोग दूँगा।
- कभी भी समय बर्बाद नहीं करूँगा।
- मैं केवल वही करूँगा जिसके लिए यह जीवन समर्पित किया है।
- मैं स्वयं को कहीं भी उलझाऊँगा नहीं।
- मैं कभी ना नहीं करूँगा..आदि-आदि।

इस प्रकार के नियमों से जीवन में काफी बल का भी अनुभव हुआ और जीवन सदा उलझनों से मुक्त रहा।

खुदा दोस्त ने मुझे संपूर्ण पवित्रता की सौगात दी

ईश्वरीय महावाक्यों के द्वारा ज्यों-ज्यों संपूर्ण पवित्रता की सूक्ष्मता समझ में आती रही, इस ओर मेरा विशेष ध्यान रहा। यह भी आरंभ से ही मेरा रुचिकर विषय था। मुझे सदा ही पवित्रता का नशा भी रहा और आयु बढ़ने के साथ-साथ मैंने इसे कठिन नहीं, सहज अनुभव किया। छोटी-छोटी अपवित्रताओं ने अवश्य ही कई बार प्रवेश किया परन्तु वे मुझ पर अपना प्रभाव न छोड़ सकीं क्योंकि खुदा-दोस्त से दोस्ती निभाने के लिए मुझे अपने दिल को नितांत निर्मल रखना था।

सन् 1981-82 में मेरा पूरा ध्यान संपूर्ण पवित्रता पर एकाग्र हो गया और एक दिन एक दिव्य अनुभव के साथ

मेरा यह प्रिय विषय भी पूर्ण हो गया। उस दिन से पवित्रता की शक्ति के सुन्दर अनुभव हुए, सभी संकल्प सिद्ध होने के अनुभव हुए और मन एक अलौकिक सुख से भरपूर रहने लगा।

ज्ञान-प्राप्ति से पूर्व ही मुझे यह बात अच्छी तरह समझा दी गई थी कि 'अहंकार पतन का कारण है।' ज्ञान में जब मैंने यह सुना कि ब्रह्मा बाबा ने नम्बर वन इसलिए प्राप्त किया क्योंकि वे संपूर्ण निरहंकारी बनने में नम्बर वन रहे तो मुझे यह ख्याल रहा कि मुझे मेरी श्रेष्ठ बुद्धि का ज़रा भी अहंकार न हो। मैंने सूक्ष्म अहं को जानने के मापदण्ड अपने पास कायम किये। अनेक योग्यतायें, सफलतायें या सम्मान प्राप्त करते हुए मुझे यह नहीं भूलता कि ये सब मेरी मेहनत का फल नहीं बल्कि ईश्वरीय देन हैं। जीवन में जब भी कभी सूक्ष्म भी मैंपन आया, मुझे फौरन शिवबाबा का इशारा मिला कि नहीं, तुम कुछ नहीं कर रहे हो, सब कुछ ईश्वरीय शक्तियों के द्वारा ही हो रहा है।

भगवान ने मुझे संपूर्ण सुख प्रदान किया

वरदानों में पलता यह जीवन ईश्वरीय सुखों से भरपूर हो गया। बाबा ने अनेक कलायें इस जीवन में भर दी। मुझे यह देखकर अत्यंत गर्व का अनुभव होता है कि यह जीवन सदा ईश्वरीय छत्रछाया में बीता, उसके प्यार में पला, उसके आशीर्वादों से सफल हुआ। जब भी पीछे मुड़कर मैं अपने जीवन पर एक दृष्टि डालता हूँ तो मन बाबा को दिल से शुक्रिया देते हुए नहीं थकता और मन गाता है – 'क्या-क्या न पाया बाबा, तेरे इस प्यार में..।'

अव्यक्त बापदादा ने समय-समय पर अनेक वरदान देकर इस जीवन को सुखों से भरपूर कर दिया। जीवन के हर मोड़ पर हाथ थामकर सहारा दिया और अपने नयनों में समाकर माया के हर वार से सुरक्षित रखा।

इस प्रकार, यह जीवन धन्य हो उठा भगवान का साथ पाकर। बुद्धि भरपूर हो गई दिव्य ज्ञान पाकर। मन पूरी तरह श्रेष्ठ भावनाओं से भर गया, कल्याणकारी भगवान की भावनायें देख-देख कर। अब तो मन में उमंगें हैं, समर्पित जीवन में संपूर्ण संतोष है, भाग्य की सभी रेखायें सीधी, स्पष्ट और लंबी हैं और कोई भी ऐसी बात नहीं जो श्रेष्ठ अनुभवों में न उतरी हो। यह मन बार-बार उसी शिव बाबा के गुण गाता है, यह मन उस पर कुर्बान है जिसने इस आत्मा के श्रेष्ठ भाग्य की ऐसी सुन्दर रेखायें खींची। ❖

आबू-अब्बा ग़ज़ब कमाल

अमृतलाल मदान, कैथल

भूल गया जी का जंजाल
रंक हुआ है मालामाल।
ज्ञान मिला अब, प्रेम मिला अब
सब कुछ था, था फिर भी कंगाल।
मन का सिंधु शान्त हुआ अब
लहरें उठती थीं विकराल।
कर्कश कर्कश था हर पल जो
मधुर बना मिला सुर-ताल
एक बिंदु पर ध्यान टिका अब
छूमंतर सब ढोंग बवाल।
मुरली बाबा की न्यारी है
दिल बाबा का खूब विशाल
सब प्रश्नों के उत्तर हैं अब
क्या पूछूँ अब? यही सवाल!
सच्चा तो भीतर बैठा है
बाहर झूठा देह-कंकाल।
आकर देखो दुनिया वालो
आबू-अब्बा ग़ज़ब कमाल।

'संकल्प शक्ति' पृष्ठ 10 का शेष

विद्यालय के माध्यम से यह स्पष्ट लक्ष्य दिया है कि तुम सतयुगी दुनिया के मालिक थे। तुम नर से नारायण, नारी से लक्ष्मी बन सकते हो, तुम इतना ऊँचा सोचो। तुम देवता थे, देवताओं जैसे कार्य करो। अनेक कम पढ़ी-लिखी साधारण मनुष्यात्माओं को परमात्मा ने यह लक्ष्य देकर वास्तव में इस ऊँचाई तक पहुँचाया है। हम भी अपने संकल्पों की फ्रिक्वेन्सी चेक कर इस लक्ष्य पर सेट करते हुए दृढ़ता की चाबी लगा दें तो सब कुछ सरल हो जायेगा। 'जैसा चिन्तन वैसा जीवन' यह नियम हम पर भी समान रूप से लागू होता है। ❖

बाल दिवस पर विशेष..

लघु नाटिका

गहरा गोता

• ब्रह्माकुमारी उर्मिला, शान्तिवन

पात्र-परिचय : **सृजना** – राजयोग अभ्यासी छात्रा **तारिका** – मैडम
नीमा, मल्ली, सलोनी, रोजी, राशि – सृजना की सखियाँ

(सत्तरह वर्ष की सृजना पिछले तीन वर्ष से मम्मी के साथ राजयोग केन्द्र पर जाती है। भगवान से मन को जोड़कर जब वह चाँद-तारों से पार परमधाम पहुँचती है तो आनन्द से भरपूर हो जाती है। नित्य के राजयोग अभ्यास ने उसमें दया, सत्य, प्रेम, सात्विकता, इन्द्रिय निग्रह, कर्मठता, अनुशासन आदि गुणों को विकसित कर दिया है। कई बार, स्कूल में, अपने उसूलों को लेकर वह अकेली भी पड़ जाती है परन्तु सर्वशक्तिवान शिवबाबा को याद करते ही उसे लगता है, 'जिसका साथी है भगवान, उसको क्या रोकेगा आँधी और तूफान' और वह आत्मविश्वास का कवच धारण कर, धारा के विपरीत तैरने में सफलता पाती जाती है। उसकी अपनी स्नेही सखियाँ भी कभी-कभी परीक्षा का रूप धारण कर लेती हैं पर वह प्रेम और नेम का संतुलन धारण कर उनको संतुष्ट कर देती है। शिक्षकगण भी उसकी सच्चाई, सादगी, सफाई, साहस के आगे मौन हो जाते हैं)

(सृजना और नीमा दोनों, आधी छुट्टी के समय लॉन में अपना-अपना टिफिन खोलकर बैठी हैं)

नीमा – सृजना, दिखाओ तो, तुम्हारी मम्मी ने क्या डाला है टिफिन में?

सृजना – देखो, आलू के परांठे और केले की सब्जी, पर अपना टिफिन भी तो दिखाओ *(नीमा खोलकर दिखाती है)*

सृजना – *(हलका-सा नाक चढ़ाकर)* इसमें तो विचित्र प्रकार की गंध आ रही है।

नीमा – *(हँसते हुए)* तुमको गंध आ रही है, मैं तो बड़े शौक से बनवा कर लाई हूँ, अण्डे की बनी हर चीज़ मुझे बहुत पसंद है, अरे यार, एक टुकड़ा खाकर देख, चखने में क्या जाता है।

सृजना – *(जल्दी से अपने टिफिन का ढक्कन बंद करते हुए)* दूर-दूर जाकर बैठो, इस बदबू से मेरा जी मितलाने लगा है।

(नीमा दो मीटर की दूरी पर बैठकर कौर तोड़ने लगती है)

सृजना – अरे भाई, दूर और दूर, उस तरफ वाले पेड़ के नीचे जाओ ना, तुम्हारे टिफिन को छूकर जो हवा निकलेगी, वह मेरे टिफिन को छूती रहेगी, सच मैं तो अपवित्र हो जाऊँगी।

(जब सृजना देखती है कि नीमा नहीं उठ रही है तो खुद दौड़कर लगभग 20 मीटर दूर पेड़ के नीचे बैठकर भगवान की याद में खाती है, नीमा मजबूरन अकेले ही भोजन खाती है और भोजन पूरा करके पुन: सृजना के पास ही आ जाती है)

नीमा – देख, टिफिन को अच्छे से साफ करके ले आई हूँ, अब दूर मत भागना, तेरे बिना अकेले खाने में मज़ा नहीं आया, पर यह तो बता तू अण्डे को इतना बुरा क्यों मानती है?

सृजना – जो चीज़ है ही बुरी उसे मानना क्या? कल का जीवन आज का अण्डा है। जैसे मानव भ्रूण है वैसे ही अण्डा भी पक्षी का भ्रूण है, जो कल पक्षी बनने वाला है। तूने पेट में अण्डा डाल तो लिया, क्या पेट से साबुत अण्डा निकाल भी सकती हो? जिसे बना नहीं सकती उसे मिटाने का तुमको क्या अधिकार है? क्या संसार में खाने योग्य सात्विक चीज़ों का अभाव आ पड़ा है? प्रकृति हर ऋतु में सैकड़ों प्रकार की स्वादिष्ट और स्वास्थ्यकर चीज़ें प्रदान कर रही है, उनको छोड़कर, किसी के प्राण लेकर, किसी को जीने के अधिकार से वंचित करके, स्वार्थी, लोभी, स्वादलालची बनकर जीना तो बड़ी भारी सज़ा है। आजकल की शोधों से पता चल रहा है कि अण्डे में हानिकारक कोलेस्ट्राल और सैच्युरेटिड फैटी एसिड की मात्रा अधिक पाई जाती है।

नीमा – पर मैंने तो सुना है, अण्डे में प्रोटीन होता है..।

सृजना – प्रोटीन तो मानव में भी मिल सकता है, तो क्या मानव को भी ..? क्या प्रोटीन जहाँ भी मिले वहीं से ले लेना चाहिए? क्या खाद्य पदार्थ का केवल एक ही पहलू है कि वह शरीर को मोटा करे भले ही उसे खाकर बुद्धि, धर्म, मर्यादा, दया सब भ्रष्ट हो जाए? 'जीओ और जीने दो' के बदले 'मारो और मरो' के सिद्धांत पर चलना तो सर्वनाश का मार्ग है।

नीमा – लेकिन कई अच्छे नामी लोग भी अण्डे खाते रहे हैं।

सृजना – वे नामी अण्डे खाकर नहीं बने हैं, नामी तो वे अपने अन्य परोपकार के कार्यों के कारण बने हैं पर तू तो केवल उनके अण्डे खाने की ही नकल कर रही है, उन जैसी कौन-सी महानता धारण की भला तुमने? होना तो यह चाहिए कि महान चरित्रों की महानताओं का हम अनुसरण करें और यदि कोई कमज़ोरी उनमें रही हो तो उसे उपेक्षित करें पर तुम तो उलटा कर रही हो, महानताएँ तो एक भी नहीं अपनाई और अण्डे खाने के लिए उन्हें बैसाखी बना रही हो?

नीमा – क्या तुम रोज़ ही दूर भागकर जाया करोगी?

सृजना – एक को चुन लो, मुझको या अण्डे को, अण्डा छोड़ो तो मुझे पास पाओगी। अण्डा लाओगी तो मुझे दूर भागना ही पड़ेगा।

नीमा – *(मुस्कराकर)* मैं तुमको नहीं छोड़ सकती, अण्डा छोड़ दूँगी।

(पर्दा गिरता है)

(आधी छुट्टी के समय सृजना, नीमा, मल्ली, सलोनी, रोजी, राशि आदि 11वीं कक्षा की छात्राएँ स्कूल में कल होने वाले विदाई समारोह की चर्चा कर रही हैं। कौन, क्या पहनकर कल के समारोह में ज़्यादा से ज़्यादा आकर्षण का केन्द्र बनेगा, इस पर सभी विचारमग्न भी हैं और एक-दूसरे की राय जानने के लिए उत्सुक भी)

सलोनी – स्कूल में कल हमारी बड़ी बहनों का आखिरी दिन है, कल पूरी छूट भी है, मैं तो मम्मी की बनारसी साड़ी पहन लूँगी।

रोजी – मेरे घर में नई-नई भाभी आई है, वे मुझे अपना लहंगा-चुन्नी खुशी से दे देंगी।

राशि – मेरे पड़ोस की आंटी के पास तो मैचिंग सूट, साड़ी तथा लहंगा-चुन्नी का पूरा बाज़ार ही है, आज ही जाके देख लूँगी, जो मुझ पर फबेगा, मम्मी दिलवा देंगी।

मल्ली – अरी सृजना, तू क्यों चुपचाप बैठी है, तू भी तो बता ना, कल क्या पहनकर आयेगी?

सृजना – जो पहना है वही, और क्या?

मल्ली – अरे कल पार्टी है, पार्टी के हिसाब के कपड़े नहीं पहनेगी?

सृजना – इन कपड़ों को पहनके पार्टी में आना मना है क्या?

मल्ली – मना तो नहीं है, पर सबके बीच में सब जैसा ही बनना चाहिए ना!

सृजना – लेकिन मेरे पास तो वही हैं, जो मैं रोज़ पहनती हूँ, और कोई हैं ही नहीं।

रोजी – अरे भई, हैं तो हमारे पास भी नहीं पर माँग लेंगे ना, तुम भी किसी से माँग लेना, नहीं तो अपनी आंटी से साड़ी तो मैं भी दिला सकती हूँ।

सृजना – क्या? माँगे हुए कपड़े? अपने होते भी माँगकर? माँगना भी इसलिए कि दिखावा करना है। ना बाबा ना! मैं किसी के पहने हुए, उसके वायब्रेशन से भरे कपड़े नहीं छू सकती। माँगना तो वैसे भी अच्छा नहीं है। यदि परहित माँगना हो तो शायद बात जँच भी जाये पर इस माँगने का उद्देश्य तो दैहिक प्रदर्शन है, मैं नहीं करूँगी।

राशि – *(चुटकी लेते हुए)* माँगना नहीं है तो मम्मी को कहकर कोई नई ड्रेस खरीद लेना।

सृजना – क्यों, एक दिन के लिए मम्मी को परेशान करूँ? कपड़े तो तन ढकने के लिए होते हैं, मेरे ये कपड़े वो काम अच्छे से कर रहे हैं, मुझे कोई लालसा नहीं है।

सलोनी – *(आश्चर्य से)* तो क्या तुम यही सफेद यूनिफार्म पहनकर स्कूल आ जाओगी?

सृजना – इस ड्रेस में बुराई क्या है?

मल्ली – तुझे सबके अच्छे-अच्छे कपड़े देखकर हीन भावना आयेगी, तू सोचेगी कि काश! मैं भी इन जैसी सुन्दर बनकर आती।

सृजना – क्या सोचूँगी, वह कल देखा

जायेगा। मैं पहनूँगी यही कपड़े।

(तभी घंटी बजी, जिसे सुनते ही सभी कक्षा की ओर दौड़ गई। अगले दिन स्कूल प्रांगण की शोभा ही निराली थी। रंग-बिरंगे परिधानों, जूड़ों, सौन्दर्य प्रसाधनों से रंगीन बने चेहरे लिए छात्रायें पहचान में नहीं आ रही थी। तभी सफेद सलवार-कमीज में सृजना सबके बीच आ पधारी जैसे लाल, नीले, पीले, गुलाबी, बैंगनी फूलों के घेरे में कोई बड़ा सफेद गुलाब सबसे न्यारा-प्यारा, आकर्षण का केन्द्र हो, ऐसे सृजना के सफेद कपड़े रंग-बिरंगे परिधानों के बीच बड़े ध्यानाकर्षक लग रहे थे। सबसे ज़्यादा आकर्षक था उसका ऊँचा, सादा, सपाट मस्तक जिस पर दिव्यता का तेज और आत्मविश्वास की प्रखर किरणें बिखरी थी। पार्टी पूरी हुई, सभी लौट गये पर लौटने वालों का पीछा करता रहा वह आत्मविश्वास से दीप्त मेकअप-हीन सादा चेहरा। अगले दिन पार्टी और खासकर अपने-अपने पहनावे की समीक्षा के उद्देश्य से सभी सहेलियाँ प्रार्थना-सभा से पहले ही मैदान में इकट्ठी हो गई थीं)

मल्ली – रोजी, सच बता, सबसे सुन्दर कौन लग रही थी?

रोजी – मैं तो किसी निर्णय पर नहीं पहुँची हूँ।

मल्ली – अच्छा राशि, आप बताओ।

राशि – क्या बताऊँ, मेरा तो लहंगा लंबा था, पाँव उठाती थी तो उलझकर गिरने का भय लगता था, मैं तो ठीक से सबको देख ही नहीं पाई।

मल्ली – सलोनी, तुम तो बता दो।

सलोनी – मैंने तो सोचा था सबसे सुन्दर मेरी बनारसी साड़ी है पर यहाँ आकर वो सबसे फीकी पड़ गई, मुझे कुछ नहीं कहना।

मल्ली – अच्छा सृजना, तू ही कुछ निर्णय दे दे।

सृजना – नकली चीज़ का क्या सुन्दर! असलियत छिपाकर सब नकली बने हुए थे, एक नकली ने नकल करने में दूसरे को और दूसरे ने तीसरे को नीचा दिखा दिया, क्या निर्णय दूँ, क्या यह बताऊँ कि नकल और दिखावे में सबसे आगे कौन था?

(अचानक तारिका मैडम का आगमन)

मैडम – जल्दी चलो प्रार्थना-सभा में, मैंने तुम लोगों की सब बातें सुन ली हैं। पार्टी में सबसे सुन्दर लग रही थी सृजना मानो गहरी काली-घनी घटाओं के बीच चन्द्रमा चमक गया हो। गहरे मेकअप वाले चेहरों के बीच इसके सफेद परिधान और प्राकृतिक सुन्दरता तथा सादगी हम सबको भी बड़ी भली लगी। *(सृजना की ओर मुखातिब होकर)* शाबाश बेटे, तेरी सादगी, सच्चाई और दृढ़ता सबके लिए अनुकरणीय है। *(मैडम का प्रस्थान)*

सभी सहेलियाँ – अरी सृजना, तुम्हारे अंदर अपना कहा हुआ पूरा करने की शक्ति कहाँ से आती है? सोचते तो हम भी हैं कि अच्छे बनें, सच्चे बनें, सादे बनें पर फिर तुरंत ख्याल आ जाता है, ऐसा करेंगे तो लोग क्या कहेंगे, सहेलियाँ मजाक करेंगी, कोई साध्वी, कोई भक्तिन, कोई मीरा कहेगा, क्या तुमको ऐसे विचार नहीं आते?

सृजना – प्यारी बहनो, ये कमज़ोरी और भय के विचार हैं। अच्छा कार्य करने में, सच बोलने में, सादा रहकर धन, समय, शक्ति बचाने में भय क्यों? राजयोग केन्द्र में भगवान हमें यही पढ़ाता है। राजयोग हमारे विचारों को दृढ़ता प्रदान करता है। हमें दुनिया के कुछ कहने की चिन्ता से ज़्यादा यह चिन्ता रहती है कि व्यक्तित्व में नकारात्मक गुण भरेंगे तो भगवान क्या कहेगा, उसका सामना कैसे करेंगे, उसको क्या मुख दिखायेंगे, उसके साथी कैसे बन पायेंगे और उसका प्यार कैसे लूट सकेंगे? साथ-साथ यह भी ख्याल चलता है कि डूबे हुओं को निकालने के लिए गहरा गोता लगाना पड़ता है। सारा संसार फैशन, दिखावा, नकल, फिजूलखर्ची के सागर में डूबकर विनाश की ओर बढ़ रहा है, ऐसे में मुझे ऐसा तैराक बनना है जो इन्हें बचा सकूँ, धारा के विपरीत तैर सकूँ और गहरा गोता लगाकर भी सुरक्षित बाहर आ सकूँ। ये सभी आध्यात्मिक शक्तियाँ राजयोग से सहज प्राप्त होती हैं। आप भी राजयोग सीख सकते हैं।

सभी – भगवान आपको और भी उन्नति दे, हम आपके साथ राजयोग केन्द्र ज़रूर चलेंगी। *(पर्दा गिरता है)*

धर्म और अध्यात्म

• ब्रह्माकुमार अजय, भोसरी (पूना)

धर्म और अध्यात्म को प्राय: लोग समानार्थी शब्दों के रूप में लेते हैं। लेकिन दोनों शब्दों का अलग-अलग अर्थ अथवा अभिप्राय है। धर्म क्या है? इस संसार में जड़ या चेतन जो भी वस्तुएँ हैं सभी का अपना-अपना धर्म है अर्थात् स्वधर्म है। नींबू का स्वधर्म है खटास; गन्ने का स्वधर्म है मिठास। अग्नि का स्वधर्म है गर्मी; पानी का स्वधर्म है शीतलता। वस्तुयें जब तक अपने स्वधर्म में हैं, सुखी रहती हैं परन्तु स्वधर्म से गिरते ही विकृत हो जाती हैं। उदाहरण के लिए, शीतल पानी, अग्नि तत्व के प्रभाव में आकर अपने स्वधर्म को खो देता है और खौलने लगता है। अब जल को यदि स्वधर्म को पुन: प्राप्त करना है तो उसे अग्नि से अपने को दूर करना पड़ेगा। अग्नि से दूर होते ही वह धीरे-धीरे स्वधर्म में अर्थात् शीतलता में स्थित हो जायेगा। पानी चाहे संसार के किसी भी कोने में हो, उसका स्वधर्म शीतलता ही है। ऐसा नहीं है कि हिन्द महासागर के जल का धर्म दूसरा है और अरब सागर के जल का धर्म दूसरा। नहीं, जल माना जल। जल चाहे जहाँ भी हो, उसका धर्म है शीतल रहना, शीतलता देना। इसी प्रकार मानवात्माएँ चाहे संसार के किसी भी कोने में हों, सभी का स्वधर्म समान है। सभी आत्माओं का मूल धर्म है शांति और पवित्रता। यदि आत्मा काम, क्रोध ... आदि विकारों के संपर्क में आती है तो वह भी शान्ति और पवित्रता को खो देती है। स्वधर्म से गिर जाती है। स्वधर्म को पुन: प्राप्त करने के लिए इन विकारों से अपने को दूर करना पड़ेगा।

अब दूसरा प्रश्न आता है कि अध्यात्म क्या है? लौकिक पढ़ाई अथवा अध्ययन द्वारा लोग डॉक्टर, वकील, जज, पुलिस इत्यादि पदों को प्राप्त करते हैं। लौकिक पढ़ाई में हम देखते हैं, डॉक्टर बनने के लिए अलग प्रकार का अध्ययन तथा जज, वकील इत्यादि बनने के लिए अलग प्रकार का अध्ययन करना पड़ता है। तो सिद्ध है कि अध्ययन एक माध्यम है लक्ष्य प्राप्ति का। 'आत्मा का अध्ययन ही अध्यात्म है' और इस अध्ययन से आत्मा अपने सर्वोच्च और अंतिम लक्ष्य अर्थात् मनुष्य से 'देवपद' को प्राप्त कर लेती है। किसी के मन में प्रश्न उठ सकता है कि आत्मा का कैसा अध्ययन? तो संक्षेप में हम यहाँ बस इतना ही लिखेंगे कि आत्मा क्या है; परमात्मा क्या है; आत्मा कहाँ से आती है और फिर कहाँ जाती है; आत्मा का स्वधर्म और स्वरूप क्या है; परमात्मा का स्वधर्म, स्वरूप और कर्त्तव्य क्या है – इन सभी बातों की सत्य जानकारी प्राप्त करना ही आत्मा का अध्ययन अथवा आध्यात्मिक पुरुषार्थ है। जैसे डॉक्टर, वकील अथवा जज इत्यादि बनने के लिए शिक्षा देने वाले ज्ञाता शिक्षक होते हैं, इन पदों को प्राप्त करने के लिए जो विषय हैं उन के ज्ञाता तो मिलना संभव है लेकिन आध्यात्मिक गुरु अथवा आचार्य एक शिवाचार्य परमात्मा ही हैं। परमात्मा को हम मनुष्य आत्मायें अपना माता-पिता कहते हैं (त्वमेव माता च पिता त्वमेव), तो सिद्ध है कि हम सभी मनुष्य आत्मायें परमपिता परमात्मा शिव के बच्चे हैं। परमात्मा इस सृष्टि रूपी वृक्ष का बीज रूप है। बीज में वृक्ष की संपूर्ण जानकारी तिरोभावित अथवा अन्तर्भूत होती है। इसलिए परमात्मा को इस सृष्टि के आदि-मध्य-अंत को जानने वाला सर्वज्ञ अथवा त्रिकालदर्शी कहा जाता है। उनके द्वारा बताए जा रहे पुरुषार्थ से मनुष्य देवपद को प्राप्त कर सकता है अर्थात् नर, नारायण और नारी, लक्ष्मी पद को प्राप्त कर सकती है। वर्तमान समय कल्प का अति कल्याणकारी युग पुरुषोत्तम संगमयुग चल रहा है। आध्यात्मिक ज्ञान, जो परमात्मा पिता वर्तमान समय दे रहे हैं, उसका अनुसरण करते हुए, स्वधर्म में टिककर हम मुक्ति-जीवन्मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं। धार्मिक झगड़े, स्वधर्म में टिककर ही मिटाए जा सकते हैं। ❖

पवित्रता

• ब्रह्माकुमार नरेश, मुजफ्फरनगर

पवित्रता क्या है? स्मृति में व्यर्थ व तामसिक बातों की शून्यता या अभाव, वृत्ति में नि:स्वार्थ प्रेम के प्रकंपन, दृष्टि में निर्मलता-स्वच्छता, कृति में सुकर्मता, स्थिति में अचलता-एकरसता-एकरूपता, मन में शुभभावना-शुभकामना और बुद्धि में दिव्यता-प्रखरता का होना 'पवित्रता' कहा जा सकता है। सहज सरल शब्दों में, सूक्ष्म शक्ति आत्मा का अपने आदि मौलिक स्वरूप या स्थिति में स्थित होना ही पवित्रता है। पवित्रता बाहर से धारण नहीं हो सकती, इसका तो अन्दर से आविर्भाव करना पड़ता है।

'काम' का बीज है देह-अभिमान

पवित्रता की भेंट में, अपवित्रता अर्थात् सात मौलिक गुणों का निष्क्रिय होना जिससे आत्मा पतित, विकारी बनती है। जब मनुष्यों के संस्कारों में अपवित्रता की बात होती है तो इसे काम विकार के नाम से पुकारा जाता है। यह विकार पाँच विकारों में पहला स्थान रखता है। यह बाकी सभी विकारों को आधार प्रदान करता है। यह है तना और बाकी के विकार हैं इसकी शाखायें। यह तना जिस बीज से पैदा होता है उसे 'देह अभिमान' कहा जाता है। सतयुग के आदि में मनुष्य 'आत्म अभिमानी' हुआ करते थे। वे अति खूबसूरत, निरोगी व तेजोमय होते हुए भी एक-दूसरे की काया पर आकर्षित नहीं थे। परन्तु जैसे-जैसे पीढ़ियाँ आगे चलीं, उनमें पहले 'देह-भान' आया, फिर 'देह-अभिमान', फिर 'देह-आकर्षण' और फिर 'कामाकर्षण' आने लगा। इससे सबसे बड़ा अधोमुखी परिवर्तन यह आया कि जन्म लेने की क्रिया 'पवित्र दृष्टि' व 'पवित्र संकल्प शक्ति' के योगबल के बजाय कुदृष्टि व वासनात्मक भोग बल से होने लगी। जिस संतान की पैदाइश की नींव ही भोग-वासना हो, उस संतान की आत्मा भला संपूर्ण पवित्रता की आदि मौलिक स्थिति का कभी अनुभव कैसे कर सकती है!

पवित्रता ही दुर्लभ कर्म है

कमल का पुष्प कीचड़ में रह कर भी न्यारा, प्यारा व लुभावना होता है और उसे भारत का राष्ट्रीय पुष्प स्वीकारा गया है। मोर में काम विकार नहीं होता और वंशवृद्धि पवित्रता से होती है। वह अमृत-सरीखी बोली बोलता है मगर उसका आहार सांप है। यह दिखाता है कि पाँच विकारों रूपी सांप का जिसने भक्षण किया अर्थात् उसे नष्ट किया हो वही पवित्र रह सकता है। मोर के पवित्रता के गुण ने उसे भारत के राष्ट्रीय पक्षी का गौरव दिलाया है। भारत विश्व का सबसे प्राचीन देश माना जाता है क्योंकि आज से पाँच हज़ार वर्ष पहले यहाँ देवी-देवताओं का राज्य था, वे संपूर्ण पवित्र थे, उनकी इतनी पूजा-अर्चना का आधार उनकी पवित्रता ही है। पवित्रता ही वो दुर्लभ कर्म है जिसके एवज़ में उनके जड़ रूपों की भी इतनी पूजा-स्तुति हो रही है।

ब्रह्मचर्य अर्थात् ब्रह्मा-आचरण

ब्रह्मचर्य को चार आश्रमों में पहला माना गया है परन्तु इसके यथार्थ शाब्दिक अर्थ से आम मनुष्य अनभिज्ञ है। इसका अर्थ है 'ब्रह्मा के जैसा आचरण'। ब्रह्मा के बारे में कहा जाता है कि उन्होंने संकल्पों के द्वारा सृष्टि की स्थापना की। परन्तु ब्रह्मा कब और कहाँ हुए व उन्होंने कौन-से संकल्प से कौन-सी सृष्टि कब और कैसे स्थापित की, यह कोई नहीं बताता। अगर संकल्पों से सृष्टि स्थापित हुई तो ज़रूर वे संकल्प अति संयमित, शक्तिशाली, कल्याणकारी, एकाग्र व परमात्म-प्रेरित होंगे। ऐसे पवित्र संकल्प अर्थात् शक्ति संपन्न संकल्प ही दिव्य रचनात्मक कर्म कराते हैं।

सृष्टि चलाने की ज़िम्मेवारी सृष्टिकर्त्ता की है

आज ब्रह्मचर्य की बात यह कह कर हँसी में उड़ा दी जाती है कि सृष्टि कैसे चलेगी। यह कहना एक प्रकार से अपनी कमज़ोरी पर पर्दा डालना

है। यह सृष्टि सतयुग से चली ही है संपूर्ण ब्रह्मचर्य के कुदरती नियम से। उस समय तो इस धरा पर बहुत ही थोड़े (लगभग 9-10 लाख) मनुष्य थे और ऐसी चिन्ता तो उनको होनी चाहिये थी। फिर यह भी नहीं भूलना चाहिये कि इस सृष्टि को चलाने की ज़िम्मेवारी या तो सृष्टिकर्त्ता परमात्मा की है या कुदरत की बनी बनाई व्यवस्था की। आज सृष्टि के विनाश के इतने साधन मनुष्यों के द्वारा बनाये जा रहे हैं, क्या कभी उनसे यह पूछा गया कि यह सृष्टि कैसे चलेगी? यदि मनुष्यों को यह समझ में आ जाये कि अब इस पतित सृष्टि को चलना ही नहीं है क्योंकि आज वे सारे लक्षण सर्वविदित हो रहे हैं जो कि पुरानी सृष्टि के समाप्त हो कर नई सृष्टि के आगमन के लिये ज़रूरी होते हैं, तो वे मात्र एक ब्रह्मचर्य पर ही नहीं बल्कि परमात्मा द्वारा बतलाई जा रही अन्य सभी बातों पर भी अमल करने लगेंगे।

पवित्रता के महत्त्व को नकारने वाले मनुष्य जब कोई धार्मिक अनुष्ठान करते हैं तब पवित्र रहते हैं। धार्मिक स्थलों पर उनके मनोभाव, विचार व कर्म पवित्र हो जाते हैं। जब तक पवित्रता का संस्कार नहीं है, तब तक किसी भी धर्मस्थल पर जाने, लंबे-चौड़े धार्मिक अनुष्ठान करने, नित्य मंत्रों का जाप करने या जंगल-गुफाओं में जाकर तपस्या करने का कोई फायदा नहीं है, और जब पवित्रता का संस्कार है और पवित्रता के सागर शिव का यथार्थ परिचय है, तो यह सब करने की कोई आवश्यकता ही नहीं है। फिर तो पवित्र बुद्धि का योग स्वत: स्वभावत: उस परमपिता से उठते-बैठते, दैनिक कर्म करते भी लगा रहता है और यही सच्ची साधना है।

जहाँ पवित्रता वहाँ निर्भीकता

वर्तमान के जो भी प्रमुख धर्म हैं, उनमें भी पवित्रता को महत्त्व दिया गया है। जहाँ पवित्रता है वहाँ निर्भीकता है और जहाँ निर्भीकता है वहीं स्वतंत्रता है। **बाइबिल के अनुसार, 'आदि मानव आदम अत्यंत पवित्र व स्वतंत्र था, अन्त में उसके असत्य कर्मों से उसकी पवित्रता नष्ट हो गई। उसके बाद ही उसे दुखमय जीवन व अशान्ति प्राप्त हुई।' मुसलमान भी आदम तथा उसकी जन्मजात पवित्रता को स्वीकारते हैं और मानते हैं कि हजरत मुहम्मद के आगमन से उस लुप्त पवित्रता की पुनर्स्थापना का उपाय प्राप्त हो गया। गौतम बुद्ध ने निर्वाण प्राप्ति हेतु व महावीर ने कैवल्य प्राप्ति हेतु काम वासना के पूर्ण त्याग को आवश्यक बतलाया था। परन्तु आज धर्मों में वैचारिक कट्टरता बढ़ी है और धर्म के मर्म 'पवित्रता' का अनुसरण करने को कोई तैयार नहीं है।**

रिश्ते हो चुके हैं तार-तार

आज समाज की जो दुर्गति हो गई है उसके पीछे असंख्य कारण गिनाये जा सकते हैं। परन्तु यदि सार रूप में किसी एक कारण को ढूँढ़ा जाये तो वह है 'काम विकार'। आज अखबारों में या टी.वी. पर जो भी आपराधिक खबरें दिखाई जा रही हैं, उनमें 70 से 80 प्रतिशत अपराध के मूल में काम विकार का कारण होता है। इस विकार की सारी हदें समाप्त हो चुकी हैं और सारे रिश्ते तार-तार हो चुके हैं। आज नित्य यह देखने में आ रहा है कि बाप ही अपनी पुत्री का बलात्कार कर रहा है। कई-कई बच्चों वाली माँ, अड़ोस-पड़ोस के किसी पुरुष के साथ भाग रही है। नाबालिग बच्चियाँ माँ बन रही हैं या अपने किसी मित्र के साथ घर छोड़ कर भाग रही हैं। हत्या की जितनी भी घटनायें हो रही हैं, उनमें लगभग 60 प्रतिशत का कारण नाजायज़ संबंध होता है। एक दशक पहले एक विशाल देश के राष्ट्रपति का अपने ही कार्यालय की एक युवती से नाजायज़ संबंध का मामला पूरे विश्व में चर्चा का विषय बना था। इससे सारे विश्व के युवाओं के अन्दर नाजायज़ संबंध के प्रति क्या मानसिकता बनी होगी?

अपवित्र कल्पना भी उतनी ही हानिकारक है

आज समाज के हर क्षेत्र में, हर गतिविधि या व्यवसाय में काम विकार (अपवित्रता) ने अपनी पैठ बना ली है। कवि अपनी कविताओं में वासनात्मक ढंग से नारी की काया या रूप का वर्णन करते हैं। उपन्यासकारों

द्वारा अक्सर नर-नारी के आपसी संबंधों के वासनात्मक पक्ष के इर्द-गिर्द ही सारा उपन्यास केन्द्रित किया जाता है। उनकी ऐसी अपवित्र कल्पना उतनी ही हानिकारक है जितना हानिकारक अपवित्र कर्म होता है। फिल्म निर्माता काम-वासना के दृश्यों की भरमार करके ही फिल्में बनाते हैं। लगभग सभी उपभोक्ता वस्तुओं के प्रचार हेतु नारी के अशोभनीय रूप को ही माध्यम बनाया जाता है। घर से निकलते ही सड़क के किनारे लगे होर्डिंग व दीवारों पर चिपके पोस्टर के भद्दे दृश्य किसी भी स्वच्छ मन को अपवित्र करने के लिए काफी हैं। सौंदर्य प्रसाधनों की बाज़ार में भरमार है जो फिर नारी के स्वाभाविक कुदरती रूप में उत्तेजना पैदा करने का काम करते हैं। गली-गली में खुल गये ब्यूटी पार्लर एक प्रकार से पवित्रता पर हमला ही हैं। चारों तरफ अपवित्रता का बोलबाला है परन्तु पूरे समाज ने मानो इन बातों को स्वीकार कर लिया है क्योंकि किसी को हैरानी-परेशानी या एतराज होता नहीं दिखाई देता। कारण यह है कि पवित्रता का महत्त्व, उसकी उपलब्धि, उसके स्वरूप के ज्ञान का अभाव है।

आचार प्रथम धर्म

आज समाज में दो बातों का अभाव दिखाई देता है, जो हैं सदाचार व स्वास्थ्य। जन-सामान्य में दुराचार व कई-कई शारीरिक व मानसिक बीमारियाँ व्याप्त हैं। स्वास्थ्य का मूल हृदय की पवित्रता है और हृदय की पवित्रता के लिये जीवन में सदाचार आवश्यक है। कहा भी जाता है, 'आचार प्रथमो धर्म' अर्थात् सदाचार या सुसंस्कार ही प्रथम धर्म है। सदाचार के लिये चित्त की गुणात्मक एकाग्रता आवश्यक है जो फिर पवित्रता के बिना नहीं हो सकती। चित्त की एकाग्रता से ही योग की शुरूआत होती है।

आज समाज में कोई भी ऐसी विधि उपलब्ध नहीं है जिसके द्वारा एक कुसंस्कारी के संस्कारों को सुसंस्कृत कर दिया जाये। जब दुराचार की सारी सीमायें टूट जाती हैं तब वह कल्याणकारी परम शक्ति (परमात्मा पिता) सदाचार व पवित्रता के युग की स्थापना करने आती है। चूंकि उसे सारी वसुंधरा को पवित्र व सदाचारी बनाना होता है, अत: वह अनेकों चैतन्य शिव शक्तियों की रचना कर उनके द्वारा इस श्रेष्ठ कार्य को अंजाम देती है। फिर महाविनाश के द्वारा जब कल्प व युग का परिवर्तन होता है तो इस वसुंधरा पर वही विचरण कर पाते हैं जो पवित्र व सदाचारी बन गये थे। परन्तु ये बातें वही समझ पाते हैं जिनकी आत्मा पहले कभी पूर्ण पवित्र व सदाचारी-सुसंस्कारी बन चुकी हो।

ईश्वरीय शक्ति का कमाल

यदि ब्रह्माकुमारी संस्था की नींव 'संपूर्ण पवित्रता' पर आधारित है और इस संस्था से जुड़े राजयोग के लाखों साधक यदि इस कठिन व्रत का सहज रीति से पालन कर पा रहे हैं तो ज़रूर यह 'ईश्वरीय शक्ति' का ही कमाल है। यदि ईश्वर ही यह चाहता है कि अब संपूर्ण पवित्रता धारण करो तो ज़रूर इसकी शक्ति भी वही देगा, और वह दे भी रहा है। ईश्वर सारी आत्माओं का परमपिता है और वह खुद जानता है कि इस समय उसके बच्चों का हित किन बातों में है। एक तीन-चार साल का बच्चा जब अपने पिता की अंगुली पकड़ कर भीड़ भरे बाज़ार में जाता है तो वह निर्भय होकर बिना सवाल-जवाब किये, पिता का अनुसरण करता है। उसे पता है कि पिता उसे सही रास्ते पर ले जा रहा है और उसके रहते वह बिल्कुल सुरक्षित है। परन्तु वही बच्चा अब बड़ा होकर सारे संसार के परमपिता का अनुसरण करने को तैयार नहीं है। वह रोज़ पूजा-अर्चना करते समय उसे अपनी माँगें बताने में संकोच नहीं करता, बल्कि **ज़्यादातर भक्त पूजा करते ही हैं अपना माँग-पत्र थमाने हेतु अर्थात् भगवान उनकी वे इच्छाएँ पूरी करें जिनके अनुरूप उसने कर्म नहीं किया है, परन्तु वह परमपिता उसके हित के लिए कुछ भी कहे तो उसका अमल न किया जाये, भला यह कैसी मूढ़ता है?**

(क्रमशः)

व्यसनों का ज़हर – ढाये कहर

• ब्रह्माकुमार रामसिंह, रेवाड़ी

दुर्व्यसनों एवं मदिरापान में सदा ग्रस्त रहने वाला एक सेठ था। उसके पास कई नौकर थे पर वह इशारे से बात को समझ लेने वाले किसी बहुत समझदार नौकर की तलाश में था। एक दिन अखबार में उसने एक ऐसे व्यक्ति का नाम पढ़ा जिसने किसी मुकदमे में जज को बहुत अच्छे उत्तर दिये थे और जज ने भी उसकी बुद्धि की प्रशंसा की थी। सेठ उस व्यक्ति के पास पहुँच गया और उसे अपने यहाँ नौकर रख लिया और कहा, मैं तुम्हें वेतन पूरा दूँगा लेकिन एक बात याद रखना कि मुझे किसी कार्य के लिए बार-बार न कहना पड़े। नये नौकर ने बात को समझ लिया और सेवा करने लगा पर सेठ को दुर्व्यसनग्रस्त देख उसे बड़ी दया आई। उसने दृढ़ संकल्प किया कि मैं किसी भी तरीके से सेठ को दुर्व्यसनों के जंजाल से ज़रूर बचाऊँगा। वह सही मौके की तलाश करने लगा। एक दिन सेठ ने इस नये नौकर से शराब की बोतल मंगवाई। बगीचे में बैठे सेठ के सामने उसने बोतल लाकर रखी और साथ ही खाने के बर्तन, माँस, दवा का पैकेट, कफन और कुछ लकड़ियाँ आदि भी रख दीं। सेठ ने हैरान होकर पूछा, ये सब चीज़ें क्या हैं? नौकर ने जवाब दिया, सेठ जी, आपने कहा था, किसी चीज़ के लिए मुझे बार-बार न कहना पड़े, अत: सब सामग्री एक साथ ले आया हूँ क्योंकि शराब के साथ माँस भी चाहिए, वो तैयार है। शराब और माँस से रोग बढ़ेंगे अत: दवा भी ले आया हूँ। इन दुर्व्यसनों के कारण जल्दी मरना पड़ेगा इसलिए जलाने के लिए लकड़ियाँ, कफन आदि भी ले आया हूँ। ये सब देख सेठ बाहर से तो चुप रहा लेकिन मन ही मन बहुत शर्मिन्दा हुआ। फिर बोला, आप बहुत चतुर और समझदार हैं, आपने मेरी आँखें खोल दी हैं। दुर्व्यसनों के परिणाम के प्रति आपने मुझे समय रहते सावधान कर दिया है, अत: आज से मैं इन सबका त्याग करता हूँ और आपका बहुत-बहुत आभारी हूँ।

उपरोक्त दृष्टांत से लगता है कि सेठ जी ने कोई पुण्य कर्म किये होंगे जो उनको ऐसा समझदार नौकर मिल गया लेकिन आज के युग में अनगिनत लोग व्यसनों के वशीभूत होकर समय से पहले ही अपनी अर्थी सजाने में लगे हुए हैं। कोई व्यक्ति कितना भी पढ़ा-लिखा हो लेकिन यदि उसे अपने हाथों किए जाने वाले कार्यों से होने वाला अपना ही नुकसान दिखाई न पड़े तो उसे क्या कहा जायेगा? सेठ जी को तो एक मनुष्य ने चेताया लेकिन हम सबको तो भगवान बार-बार चेता रहा है। सेठ जी ने तो एक मनुष्य की बात मान कर अपनी राहें सुधार लीं, क्या भगवान के द्वारा चेताये जाने पर भी हम सोये ही रहेंगे?

किसी ने ठीक ही कहा है –

जिस जीवन के संगी-साथी
मदिरा और व्यसन,
निज हाथों तैयार करे वो
लकड़ी और कफन।

अगर आप दुर्व्यसनों से मुक्त होना चाहते हैं तथा परखने व निर्णय करने की शक्तियाँ प्राप्त करना चाहते हैं तो नज़दीकी ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र से नि:शुल्क सेवायें प्राप्त कर सकते हैं।

हम आये तुम्हारे द्वार

राजकुमारी मदान, कैथल

हम आये तुम्हारे द्वार
अब हमें लगाओ पार
भोग से भागे-भागे आये
आकर हुए परम निहाल
दुनिया फँसी है भोग भँवर में
अति विकट है यह मँझधार
रिश्ते-नाते टूट रहे हैं
भूल गये ज्यों सब संस्कार
हर ओर है अंधी दौड़-सी
ब्रह्मा-धाम में जीवन सार
सतयुग ज्यों बस आने को है
बस उसी का है इंतज़ार
कलियुग तो अब न सुधरेगा
हर कोशिश हो गई बेकार

भ्रांतियाँ बकवास सिद्ध हुई

• मनोहर लाल अरोड़ा, एडिशनल सब डिविजलन ऑफिसर, करनाल

एक दिन जब मैं कार्यालय में गया तो मेरे दो साथी आध्यात्मिक ज्ञान की चर्चा कर रहे थे। एक ने कहा, मुझे भी मेडिटेशन के बारे में बताइये ना! दूसरे ने कहा, मुझे मेरे गुरु की तरफ से बताने की आज्ञा नहीं है। मैंने भी कुछ जानने के लिए प्रार्थना की तो उत्तर मिला, ध्यान लगाओ, अपने आप सब कुछ सीख जाओगे। मैं और मेरा दोस्त कई महीनों से इस खोज में थे कि कोई मेडिटेशन और आध्यात्मिक ज्ञान के बारे में कुछ समझाए ताकि तनाव भरी ज़िंदगी में कुछ शान्ति मिल सके।

ब्रह्माकुमारियों के बारे में भ्रान्तियाँ

मेरे दोस्त ने बताया कि सेक्टर सात में ब्रह्माकुमारियों का एक केन्द्र है, वे मेडिटेशन और आध्यात्मिक ज्ञान सिखाती हैं। मुझे ब्रह्माकुमारियों के बारे में इतना ही ज्ञान था कि ये जीवन-भर शादी नहीं करती और पूजा-पाठ में जीवन व्यतीत करती हैं। मैंने दोस्त से पूछा, क्या वे भाइयों को ज्ञान देती हैं? उसने कहा, देती हैं। एक दिन मैंने अपनी पत्नी को ब्रह्माकुमारी आश्रम चलने को कहा। वह बोली, ब्रह्माकुमारियाँ तुम्हें अंदर नहीं घुसने देंगी, जूते खाने हैं तो चले जाओ।

पहुँच गए स्वर्ग की दुनिया में

अगले दिन मैं हिम्मत करके केन्द्र पहुँचा, संकोचवश, 15-20 मिनट तक केन्द्र के बाहर खड़ा रहा और वापस आ गया, अंदर जाने का साहस नहीं हुआ। अगले दिन मैं दोस्त को साथ ले गया, फिर तो हिम्मत आ गई, बहनों से परिचय हुआ और फिर परिवार सहित सात दिन का कोर्स भी कर लिया। इसके चार मास बाद मुझे आबू रोड स्थित शान्तिवन जाने का सुअवसर मिला। वहाँ जाकर जो मुझे अनुभव हुआ, शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता। ऐसा महसूस हो रहा था जैसे कि हम किसी नई दुनिया, स्वर्ग में पहुँच गए हों। बहनें जब अपने विचार सुनाती थी तो ऐसा लगता था कि परमात्मा के भेजे हुए फ़रिश्ते बोल रहे हैं। उनके शब्द वास्तविक जीवन का दर्शन कराने वाले दर्पण सिद्ध हो रहे थे। ऐसा महसूस होता था मानो मुख से फूल झड़ रहे हों। हर व्यक्ति की समस्या का हल उनकी ज्ञान भरी बातें सुनकर हो रहा था। गीता बहन, ऊषा बहन, शिवानी बहन, योगिनी बहन, दीपा बहन – किसके बारे में क्या कहें! सभी के विचार एक से बढ़कर एक थे।

तन साधारण, विचार असाधारण

दादियों के बारे में तो क्या कहना! जितनी साधारण, उतने ही असाधारण उनके विचार! इतने प्रभावशाली कि दिल को अंदर तक छू जाते थे। बड़े प्यार से सभी से मनवाते थे, बोलो – ऐसा करोगे ना.. ये करोगे ना.. भूल तो नहीं जाओगे.. घर जाकर भी ऐसा ही करना.. ऐसा महसूस होता था मानो शिव बाबा स्वयं बच्चों को समझा रहे हों। हर किसी की ज़बान पर यही था कि 80 वर्ष से ऊपर की दादियाँ, इतनी बड़ी दुनिया (130 देशों में 8000 से ज़्यादा सेवाकेन्द्र) को कैसे चला रही हैं? डॉ. सतीश जी ने 'स्वस्थ तन व मन का विज्ञान' विषय पर जो कुछ बताया, उसमें भी प्रत्येक व्यक्ति की समस्या का हल था। ब्र.कु. सूरज भाई ने 'मेडिटेशन : संकल्प शक्ति द्वारा परमात्म शक्ति की अनुभूति' विषय पर बताया कि हमारी आंतरिक शक्तियाँ कैसे नष्ट होती हैं और उन्हें फिर से कैसे पाया जा सकता है। नकारात्मक विचारों को सकारात्मक विचारों में कैसे बदलना है। उनका प्रत्येक विचार जीवन को बदलने वाला था।

दूर हुई गलतफहमी

शान्तिवन, पांडव भवन, ज्ञान सरोवर, पीस पार्क – ये सभी एक से बढ़कर एक मन को शान्ति देने वाले

स्थान हैं। दिल करता था, यहीं के होकर रह जाएँ। ओमशान्ति भवन *(Universal Peace Hall)* में अंदर घुसते ही इतनी शान्ति का अनुभव हुआ कि क्या बताएँ? जब बस पीस पार्क के सामने रुकी तो हम थके हुए थे। दिल में सोचा, अब पार्क भी देखने पड़ेंगे, क्या करनाल में पार्क नहीं हैं? परंतु जैसे-जैसे पार्क में प्रवेश करते गए, बहुत बड़ी ग़लतफहमी दूर हो गई। मेडिटेशन रूम, बाबा का कमरा, एक से एक सुन्दर पौधे, यह भी बाबा जी की एक नई दुनिया नज़र आ रही थी। बच्चे थके हुए थे, चाय की मांग करने लगे, हमने कहा, पार्क से बाहर चाय की कोई दुकान देखेंगे। इतने में आवाज़ आई, इधर से आ जाओ। देखा तो वहाँ चाय, नींबू पानी आदि सब कुछ था। ऐसा लग रहा था मानो बाबा ने हमारे दिल की बात सुन ली हो। एक भाई को तो यह कहते सुना कि यहाँ तो ऐसे सेवा हो रही है जैसे हम बारात में आए हों। मेरे कमरे में दो और भाई भी थे। पहली बार ही आए थे। पहले दिन मैंने अनुभव पूछा तो बोले, ठीक है, अच्छा है। तीन दिन के बाद तो पूछने की जरूरत ही महसूस नहीं हुई, पूरी तरह समर्पित थे। कहने लगे, 'कितने ही धार्मिक स्थानों पर गए हैं, ऐसी व्यवस्था, ऐसा प्रबंध, ऐसा अनुशासन (खाने और रहने के बारे में) कहीं नहीं देखा। जो भ्रांतियाँ ब्रह्माकुमारियों के बारे में सुनी थी, मन में बनाई थीं, सारी बकवास निकली।' जीवन को सफल बनाने वाले ऐसे सुन्दर और अच्छे विचार कभी नहीं सुने। वापस आते समय गाड़ी में जितने भी लोगों से चर्चा हुई, सब हर प्रकार से संतुष्ट थे।

(शेष पृष्ठ 31 पर...)

बचना मेरे दोस्तो

ब्रह्माकुमारी मीनू, टोहाना

एक दिन चलते-चलते देखा, एक मकान था बड़ा अनोखा
एक था उसमें प्रवेश द्वार, वहाँ खड़ा था पहरेदार
मैंने भीतर जाना चाहा, पहरेदार ने शोर मचाया
इसमें घुस तो जाओगे, वापस खुश नहीं आओगे
तन-मन-धन खाली हो जायेगा, वापस लौट न आयेगा
अन्दर गया तो क्या देखा –
वहाँ बैठी थी नरकों की नानी, नष्ट कर रही थी जवानी,
एक का था बड़ा रोब-दबाव, नाम था उसका शराब
चरस-गांजा इस घर के नौकर, खिलवा रहे थे दर-दर ठोकर
तंबाकू इस घर का नाती, बाँट रहा था वो बरबादी
बीड़ी-सिगरेट दो थी बहुएँ, छोड़ रही थी काले धुएँ
अफीम-जर्दा इस घर के बेटे, सुख का सांस न लेने देते
गुटखा तो सबका सरदार, बीमारी का कर रहा था वार
जब मैंने इन सबको देखा, बाहर का दरवाजा खोजा
सबने मुझको ऐसा घेरा, लूट लिया सब कुछ फिर मेरा
मुफ्त में दिये बहुत उपहार, बीमारी दे दी कई हज़ार
टी.बी., दमा, कब्ज, कैंसर, बैठ गए सारे आ सिर पर
बी.पी., शुगर पीछे पड़ गए, दोनों फेफड़े अब तो गल गए
पहुँच गया हूँ मृत्यु के दर, बीवी-बच्चे हो गए दर-दर
सिर पर मेरे मौत खड़ी है, शायद अब अन्तिम घड़ी है
दोस्तो, कुछ कहना चाहता हूँ, मजबूरी से मैं जाता हूँ
मेरे जैसी भूल न करना, इस घर में तुम कभी न घुसना
जीते-जी ही मर जाओगे, मेरी तरह फिर पछताओगे।

मन पर नियंत्रण

• ब्र.कु. किरण, मुम्बई (बोरिवली)

संसार एक रंगमंच है जिस पर हम अभिनेता की तरह अभिनय करते हैं। इस अभिनय के सूत्र हमारे मन में गुँथे होते हैं। यदि मन, विवेक (बुद्धि) के अधीन रहता है तो जीवन रूपी फिल्म सुपरहिट बनेगी और अगर बुद्धि, मन के अधीन रहती है, मन को मनमानी करने देती है तो यह फिल्म सुपर फ्लॉप साबित होती है।

मन में खोट है तो अच्छे विचार कहाँ?

दरअसल हम मन के मालिक हैं पर बन गये हैं गुलाम जिसका परिणाम यह है कि हम वैसा आचरण नहीं कर पाते जैसा कि हमें करना चाहिए बल्कि वैसा करते हैं जैसा कि मनचले (मन की मत पर चलने वाले) करते हैं। अब यह तो ज़ाहिर है कि दुरुपयोग का फल अच्छा नहीं होता, सुखदायक नहीं, दुखदायक होता है। पर हम यह भी नहीं सोचते कि हम अच्छे फल पाने वाला आचरण क्यों नहीं करते? हम पेड़ तो बबूल का बोते हैं और आम पाने की इच्छा रखते हैं। बबूल के झाड़ के काँटे चुभते हैं और हम दुखी होते हैं और तब भी हम यह नहीं सोचते कि बीज तो हमने ही बोया था और मन के कहने से ही बोया था। तात्पर्य यह है कि कर्म वैसा ही होता है जैसा हम सोचते हैं और सोचना, विचार करना यह मन का ही काम है। अब मन में ही खोट हो तो अच्छे विचार कैसे कर सकता है? अब विचार ही अच्छे नहीं तो कर्म कैसे अच्छे कर पायेंगे? और जब मन में खोट होती है तो वह तरह-तरह के बहाने बनाता है और करता वही है जो उसे अच्छा लगता है। इसलिए कहावत है कि 'मन हरामी तो हुज्जता ढेर।'

सकारात्मक विचार कौन-से हैं?

अब आखिर इस मन का इलाज क्या किया जाये? इसे ऐसे ही मनमानी करने दी जाये या फिर सही दिशा में चलाने का उपाय किया जाये? कोई भी निर्णय करने से पहले यह बात पत्थर की लकीर मान लीजिए कि मन को स्वस्थ और विकाररहित रखे बिना गति नहीं है, सद्गति नहीं है। बस हमारी सद्गति या दुर्गति हमारे मन पर निर्भर करती है। इसलिए मन पर काबू रखना ही होगा। जैसा कि गुरु नानक जी ने फरमाया है, 'मन जीते जगतजीत।' गीता में भी लिखा है, 'आत्मा ही अपना शत्रु और आत्मा ही अपना मित्र है।' अत: हम अपने मन के साथ मित्र जैसा व्यवहार क्यों न करें? उसके साथ मित्र भाव से बातें करें। मन को मित्र बनाने के लिए 'राजयोग' एकदम सहज उपाय है। राजयोग द्वारा मन को हम अच्छी रीति से पहचान सकते हैं और सही दिशा में ले जा सकते हैं। सही दिशा अर्थात् सकारात्मक सोच। इस पर बड़े-बड़े कोर्स भी करते-कराते हैं परंतु मनुष्य यह नहीं जानता कि सकारात्मक विचारों की शुरुआत कहाँ से करें, कैसे करें और सकारात्मक विचार क्यों करने चाहिएँ?

वास्तव में सकारात्मक अर्थात् स्व आकार आत्मा। स्व यानि मैं आत्मा और आकार यानि मेरा आकार ज्योतिबिंदु स्वरूप है। तो 'मैं आत्मा हूँ' – यह विचार सारे विश्व का सबसे पहला सकारात्मक विचार है अर्थात् सकारात्मक विचारों की शुरुआत यहीं से की जाती है। 'मैं आत्मा हूँ' यह विचार पवित्र *(Pure)* और शक्तिशाली *(Powerful)* भी है। 'मैं ज्योतिबिंदु स्वरूप आत्मा हूँ, मैं पाँच तत्वों का बना हुआ शरीर नहीं हूँ, मैं सूक्ष्म हूँ अर्थात् इन आँखों से दिखाई पड़ने वाली चीज़ नहीं हूँ,' और जो चीज़ सूक्ष्म होती है, वह शक्तिशाली होती है, तो यह शक्तिशाली विचार हो गया।

मन क्या है?

जैसे आत्मा सूक्ष्म है वैसे मन आत्मा की सूक्ष्म शक्ति है। विचार करने की शक्ति को मन कहते हैं। कहते हैं, मेरे मन में यह विचार आया तो मैं कौन? जिसने यह कहा, मेरा मन, वो मैं आत्मा हूँ और मन मेरा है। इसका अर्थ यह हुआ कि मैं यानि

आत्मा और आत्मा के कहे अनुसार मन को चलना है। जैसे कि हाथ मेरा है तो मैं अपने हाथ को जब चाहूँ और जैसे चाहूँ वैसे चला सकती हूँ, तो मन को क्यों नहीं चला सकती? मैं एक आत्मा हूँ, यह विचार कहाँ आयेगा? मन में। मन को पता ही नहीं है कि मैं आत्मा हूँ तो मन ने क्या किया? मन ने सोच लिया, मैं शरीर हूँ और जब से स्वयं को शरीर समझा तब से यह दुख, अशान्ति, चिंता होने लगी है। इसलिए मन भी शरीर और शरीर की ही वस्तु, वैभव, संबंधों के पीछे भागता रहता है। फिर हम कहते हैं कि मन वश में नहीं है। मन को दर्पण भी कहा है अर्थात् मैं जो हूँ, जैसा हूँ वैसे विचार मन में अवश्य आयेंगे। अच्छे व्यक्ति होंगे उनके मन में जरूर अच्छे ही विचार आयेंगे, बुरे व्यक्ति के मन में जरूर बुरे संकल्प ही आयेंगे अर्थात् हम कैसे हैं, वो हमारा मन बताता है। **इसलिए मन एक दर्पण है। दर्पण में क्यों देखते हैं? इसलिए कि चेहरे पर कोई दाग है तो उसे हटायें। मन के विचार बुरे हैं तो हम परिवर्तन करें। इसकी सहज विधि है राजयोग।**

मन पर नियंत्रण कैसे प्राप्त करें?

राजयोग एक ऐसी विधि है जिसके आधार से हम मन पर नियंत्रण कर सकते हैं। इसके लिए मन का सारा किचड़ा निकालना पड़ेगा, किचड़ा निकालने में बुद्धि हमारी मदद कर सकती है। बुद्धि, आत्मा की दूसरी सूक्ष्म शक्ति है। बुद्धि अर्थात् विवेक। तो विवेक क्या-क्या कहता है, उस अनुसार मन करने लग जाए तो मन का पहले का किचड़ा भी साफ हो जाये। **मन की जगह अगर बुद्धि को अर्थात् विवेक को जीवन की फिल्म के सूत्र सौंप दिये जायें तो यह फिल्म हिट हो सकती है।**

मन पर नियंत्रण करने के फायदे

1.मन पर नियंत्रण करने से कभी भी पश्चाताप का समय नहीं आयेगा।

2. हम जीवन में निश्चिंत एवं सदा खुश रहेंगे।

3. हमारे संबंधों में मधुरता बनी रहेगी।

4. मान-अपमान, निंदा-स्तुति का असर नहीं होगा।

5.भगवान से हमारा सहज ही मिलन हो सकता है।

बस ऐसा जीवन बिताने के लिए राजयोग से मन को अपना अच्छा मित्र बना लीजिये। इसके लिए नज़दीक के प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय से संपर्क करें। ❖

बोझ देकर हलकी हो गई

निर्मला अग्रवाल, आसाम (डिब्रुगढ़)

ज्ञान मिलने से पहले मेरा दिल बहुत कमज़ोर था। किसी द्वारा गुस्से से कुछ कहे जाने पर, कुछ भी जवाब नहीं दे पाती थी, एकांत में अंदर ही अंदर बात को फील कर घंटों रोया करती थी, मन बहुत भारी हो जाता था। एक बार ज्ञानामृत में मुझे यह बात पढ़ने को मिली कि हम भगवान के बहादुर बच्चे हैं। रोने वाले बच्चों के आँसू भगवान से देखे नहीं जाते। बाबा को सदैव बच्चों का मुस्कुराता हुआ चेहरा पसन्द है। जो बच्चा बातों को फील करता है, वह फेल होता है। यह पढ़कर मैंने धीरे-धीरे बातों को फील करना कम कर दिया।

एक बार रक्षाबंधन पर्व पर मैं सेन्टर पर राखी बंधवाने गई। निमित्त बहन जी ने मुझे मेरी कोई कमज़ोरी (बुराई) पर्ची में लिखकर बाबा को देने के लिए कहा। मैंने अपनी तकलीफ देने वाली आदत, छुप-छुप कर रोने की आदत पर्ची में लिखकर बाबा को दे दी। उस दिन से मेरी यह कमज़ोरी गायब हो गई।

अगले रक्षाबंधन पर बहन जी ने पुन: बुराई दान करने को कहा। घर के सारे हिस्सों में मुझे रसोई सबसे ज़्यादा पसन्द है। रसोई मुझे साफ-सुथरी चाहिये। रसोई का सामान इधर-उधर हो तो मन में बहुत उलझन होती थी। लेकिन घर के सदस्य तो जैसा चाहेंगे वैसा ही करेंगे। दूसरी बार मैंने अपनी यह कमज़ोरी पर्ची में लिखकर दी। इस बार भी वैसा ही हुआ। अब मेरे से जितना हो पाता है, मैं रसोई की साफ-सफाई पर ध्यान देती हूँ। इसके उपरांत कोई तनाव नहीं पालती। इस तकलीफ से बाबा ने हलका कर दिया है। लाख-लाख शुक्रिया बाबा आपका!

नारी पहचाने अपने गौरव को

• ब्रह्माकुमार मुकेश, वाराणसी

आदि काल से नारी विश्व रंगमंच के इतिहास की प्रधान नायिका रही है। उसके साथ मानवता हँसी और रोई है। विश्व की जननी होने के कारण विश्व का इतिहास इस केन्द्रबिन्दु के चारों तरफ फैलता और सिकुड़ता रहा है। उसमें जो भाव उदित होते हैं वही समाज में प्रतिबिम्बित होते हैं। जिस तरह परमात्मा को याद करने से हमारे पाप भस्म हो जाया करते हैं उसी तरह पवित्र नारी के दर्शन मात्र से ही पाप नाश हो जाते हैं। पवित्र नारी के पाँव धरती पर जहाँ-जहाँ पड़ते हैं वहाँ-वहाँ तीर्थ स्थान बन जाते हैं। आज भी संसार में अधिकतर मनुष्य पवित्र नारी के चरणों का स्पर्श इस अभिलाषा से करते हैं कि पाप नाश हो जायें। विद्वान श्री के.ए. चिदम्बरम ने अपनी पुस्तक 'भारत की नारी किस ओर' में नारी की महिमा करते हुए लिखा है – पूरा विश्व ही परम विचित्र यंत्र है और नारी इस यंत्र को संचालित करने की शक्ति। विश्व-यंत्र के रचयिता शिव जी भी नारी शक्ति के बिना कुछ नहीं कर सकते। नारी इस सृष्टि रंगमंच पर पुत्री, बहन, पत्नी, माँ बनकर पार्ट अदा करती है परंतु उसमें सबसे श्रेष्ठ रूप माँ का ही होता है। महर्षि व्यास ने माँ की तुलना गुरु से की और कहा, **माँ गुरुजनों में सबसे श्रेष्ठ गुरु है।** माँ की महिमा का वर्णन करते हुए उन्होंने माँ को इक्कीस नाम दिये हैं – माता, धरित्री, जननी, दयार्द्र, हृदया, शिवा, त्रिभुवन-श्रेष्ठा, देवी, निर्दोषा, परमआराधनिया, दया, शान्ति, क्षमा, धृती, स्वाहा, स्वधा, गौरी, पद्मा, विजया, जया तथा दुखहन्त्री। महादेवी वर्मा ने कहा है – **माँ का प्रेम ही सत्यम् है, पालना ही शिवम् है और माँ की शिक्षाएँ ही सुन्दरम् हैं।**

सर्वश्रेष्ठ रूप है माँ का

वेदों में भी मातृ देवो भवः के साथ-साथ यह भी लिखा गया – **'यदि वसुन्धरा पर कोई ऐसी वस्तु है जो परमात्मा के प्रेम की अधिक से अधिक स्मृति दिला सकती है तो वह माँ ही है।'** यहूदी धर्म में यह उक्ति है कि 'परमात्मा सब जगह प्रकट नहीं हो सकते इसलिए उसने माताओं की सृष्टि की।' सेंट आगस्टाइन, शिवाजी और जान रस्किन जैसे महान व्यक्तियों ने अपने ऊपर अपनी माताओं के ऋण को खुले रूप से स्वीकार किया है। स्त्री किसी भी उम्र में हो अगर स्वयं के अंदर माँ की भावना को उत्पन्न कर ले तो उसके सामने हर प्रकार की आसुरी वृत्ति स्वतः ही नष्ट हो जाती है। इस रंगमंच पर अनेक नारियों ने अपना महत्त्वपूर्ण योगदान कई रूपों में दिया है। विश्व की प्रथम नारी जिसे लोग सरस्वती, जगदम्बा, आदिदेवी, जिहोवा, ईव, हव्वा आदि अनेक नामों से जानते हैं, ने विश्व कल्याणार्थ बहुत श्रेष्ठ कर्म किये। आज तक मनुष्य उनके गुणों का वर्णन करते रहते हैं।

नर से पहले नारी का नाम

इतिहास साक्षी है कि अधिकतर उसी संस्कृति और सभ्यता को सफलता और सुरक्षा मिली जिसमें नारी को मातृसत्तात्मक व्यवस्था प्राप्त हुई, जैसी कि सतयुग में थी। वहाँ नारी के नाम से नर की पहचान होती थी, जैसेकि लक्ष्मीपति नारायण, राधारमण श्रीकृष्ण आदि-आदि। द्वापरयुग शुरू होने पर वेद, शास्त्र, उपनिषद्, पुराण, स्मृति आदि ग्रंथों की रचना हुई तो उनमें नारी को बहुत मान दिया गया। सती सावित्री, अनुसूईया, अरूंधति, वेदमाता अदिति, रोहिणी, देवकी, शैव्या, सती कर्मदेवी, सती पद्मिनी, रानी दुर्गावती, रानी लक्ष्मी बाई, गौतमी आदि अनेक महिमामयी नारियाँ विभिन्न क्षेत्रों में आज भी प्रेरणामूर्ति हैं। ब्रह्मवादिनी नाम से विख्यात अपाला, भगवती, सावित्री, घोसा, विश्ववारा, वाक, सूर्या, रोमसा, शुलभा, गार्गी, शास्पति आदि के विषय में प्राचीन साहित्य में लिखा गया है कि ये सभी नारियाँ आजीवन ब्रह्मचिन्तन, धर्मचिन्तन, अध्यात्म

चिन्तन तथा दार्शनिक चिन्तन में प्रवृत्त रहती थीं, फलस्वरूप स्वयं को व संसार को नई दिशा देती रहीं। भारत से बाहर की संस्कृतियों में भी नारी, देवी रूप में पूजी जाती रही है। चीन के परिवारों में आज भी माँ का स्थान परम आदरणीय है। अनेक सभ्यतायें नारी की अध्यक्षता में फली-फूली हैं।

भगवान का आह्वान

आज इस सृष्टि पर मानवता क्रन्दन कर रही है, ऐसे समय पर, सभ्यता और संस्कृति की रक्षिका नारी का पुन: भगवान ने आह्वान किया है। भगवान कहते हैं कि **हे नारी, तुम ही महासरस्वती, महालक्ष्मी और महादुर्गा हो। अपने में श्रद्धा, प्रेम, करुणा, क्षमा और प्रज्ञा जैसे गुणों का विकास कर पुन: इस सृष्टि को स्वर्ग बनाओ। आत्म-ग्लानि, आत्म-अवसाद और आत्म-दैन्य को त्यागो। आत्म-स्वरूप, आत्म-सम्मान एवं आत्म-शक्ति को पहचान कर स्वयं को ज्ञान-संपन्ना, शक्ति-संपन्ना और गुण-संपन्ना बना कर सिर्फ स्वयं का ही कल्याण नहीं परंतु सारे विश्व का कल्याण करो। कोई दूसरा किसी को सशक्त नहीं करता वरन् अपनी क्षमताओं का प्रस्फुटन एवं विस्तार स्वयं को ही करना पड़ता है।** इसके लिए भी भगवान कहते हैं, देह और देह के संबंधों से मोह-ममता, लोक-लाज, तृष्णा, इच्छा को त्याग मेरे से बुद्धियोग जोड़, मैं तुझे तेरा खोया हुआ देवी-पद पुन: दिला दूँगा। ❖

शिव माँ के रूप में

ब्रह्माकुमारी नागरत्ना, बैंगलोर

भगत लोग गाते हैं, भगवान! माता, पिता, बंधु, सखा, सब कुछ आप ही हैं। भगवान से हमारा पहला संबंध माँ का ही है। मान लीजिए, एक माता सुन्दर और तंदुरुस्त है पर जिस बच्चे को उसने जन्म दिया वह काला, बदसूरत, रोगी है। फिर भी बच्चे को देखते ही उसके दिल में आता है, तुम जो हो, जैसे हो, मेरे हो। दिल से स्वीकार करती है और बाद में पालना में भी कुछ कमी नहीं करती है। बच्चा तंदुरुस्त बने, ऐसा सोचकर और भी ज़्यादा पालना देती है। वैसे ही, पहले शिव बाबा का माता रूप हमारे सामने आया और कहा, हे आत्मा, तुम मेरी संतान हो। भले ही हम विकारों से बदसूरत और पापों के कारण कमज़ोर-रोगी थे, फिर भी भोलानाथ ने माँ बनकर स्वीकार किया। बाबा हमें स्मृति का तिलक देता है, 'तुम आत्मा हो।' अपनी किरणों की बाँहों से गले लगाता है। बाबा, माँ के रूप में रहमदिल होकर फिर-फिर हमारा ज्ञान से शृंगार करता है। हम फिर-फिर देह-अभिमान में गंदे होते हैं, फिर-फिर बाबा माँ के रूप से ज्ञान-स्नान कराता है।

जब एक बार मैं मधुबन, पांडव भवन में सेवार्थ गई हुई थी। हॉल में सौ से ज़्यादा लोग पट पर सोये थे। बहुत नज़दीक-नज़दीक सोते थे। अपना सामान सिरहाने की तरफ थोड़ी-सी जगह में रखते थे। मेरे पास एक गाँव की माता सोई थी, जो इतनी सफाई-पसन्द नहीं थी। उसको देखकर मुझे घृणा आती थी और सोचती थी कि कैसे मेरे जैसे ऊँचे लोगों को भी सेवा के कारण बहुत कुछ सहन करना पड़ता है। एक दिन मैं सेवा करके देर से लौटी। उस समय सब सोये पड़े थे। हॉल में प्रवेश करते ही मुझे ऐसा अनुभव हुआ जैसे कि शिव माँ के आँचल में सब सोये पड़े हैं। बाबा ने सबको प्यार-भरे आँचल में समाया है। बाबा माँ के लिए सब एक-समान हैं। उसी घड़ी पास वाली माता के प्रति घृणा-भाव समाप्त हो गया। मैं बहुत सहजता से उसके साथ रहते हुए, सेवा करते हुए, भरपूर होकर वापस लौटी। यह है शिव माँ का चमत्कार और सर्व संबंधों की जादूगरी, जो घृणा की कालिख को पोंछ, मन में प्रेम का झरना बहा दिया। ❖

सच्ची शादी हुई भगवान से

• ब्रह्माकुमार श्रीहरि शृंगारे, रहाटगाव, अमरावती

कहा जाता है, संग तारे कुसंग बोरे। कुसंग में आकर फूलों जैसे जीवन को शूलों जैसा बनाने वालों में एक मैं भी हूँ। ईश्वर विश्वासी और अच्छे संस्कारों वाला मैं, कालेज में जाते ही कुसंग में फँस कुकर्म करने लगा, फिर पागल हो गया, पागलखाने में छह इलैक्ट्रिक शॉक मुझे दिये गये जिससे मेरी वाचा चली गई। पिताजी ने मेरे लिए भगवान से बहुत दुआएँ माँगीं, शायद उन्हीं के बल से मैं ठीक हुआ। माँ बाल्यकाल में दिवंगत हो गई थी। पिताजी ने कम उम्र में मुझ पगले के साथ एक पगली लड़की की शादी करा दी। ऐसे वैवाहिक जीवन से असंतुष्ट तो मैं था ही, ऑटोरिक्शा चलाने के व्यवसाय में पुन: बुराई का संग लग गया। शराब, गांजा, चरस, बीड़ी पीने का शौक लग गया और बहुत ही विकारी बन गया। पत्नी से तलाक हो गया। एक दिन शराब के नशे में ऑटो दुर्घटनाग्रस्त हो गया, मुझे सिर पर 17 टाँके लगे।

मैं बदल न सका

अज्ञानी मनुष्य स्वयं को नहीं सुधारता पर दूसरों के सुधरे हुए होने की कामना करता है। परन्तु, **जैसे हाथ मैले हों तो पकड़ी गई साफ चीज़ भी मैली हो जाती है, चीज़ साफ चाहिए तो पहले हाथ धोने पड़ते हैं, इसी प्रकार खुद को धोए बिना, दूसरे के धुलने की कामना बेकार है।** पहली पत्नी के साथ तलाक के बाद मैं भगवान से कहता था कि मुझे दूसरी अच्छी पत्नी मिलेगी तो मैं सब बुराइयाँ छोड़ दूँगा अन्यथा जीवघात करूँगा। फिर एक सुन्दर लड़की के साथ दूसरी शादी भी हो गई पर वह नि:संतान रही। इस कारण मेरे बुरे शौक पहले से और ही बढ़ गये।

ज़्यादा फँसता गया कीचड़ में

मनुष्य ठोकर पर ठोकर खाता है पर तृष्णा की दलदल से नहीं निकलता। जैसे हारा हुआ जुआरी एक जीत की आश में कर्ज़ पर कर्ज़ चढ़ाता जाता है ऐसे ही मैं भी झूठे सुख की आस में कर्मों के कर्ज़ पर कर्ज़ चढ़ाता जा रहा था। दुख ने मुझे चिड़चिड़ा और क्रोधी बना दिया। दूसरी पत्नी से तलाक लेकर तीसरी शादी की, उससे मुझे एक कन्यारत्न की प्राप्ति हुई लेकिन पिछले तलाक के केसों में बर्बादी के कारण मैं दिल से बहुत दुखी था। फिर व्यसनों के दलदल में ज़्यादा ही फँस गया, दृष्टि-वृत्ति बहुत खराब होने के कारण तीसरी पत्नी के साथ भी वादविवाद हुआ और वह भी मायके चली गई। मुझे सब लोग बेकार समझते थे इस कारण मैंने जीवघात का इरादा पक्का

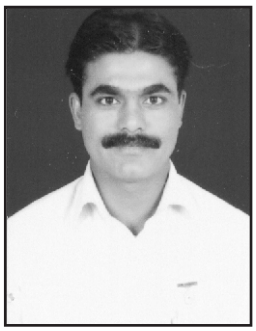

कर लिया था।

शान्ति का अनुभव हुआ

उन दिनों मुझे एक ब्रह्माकुमार भाई मिले, उनके आगे दुख प्रकट किया तो वे बोले, जीवघात बाद में करो, पहले सृष्टि पर आये भगवान से वर्सा तो लो। इस बात पर आकर्षित हो मैं उस भाई के साथ ब्रह्माकुमारी आश्रम में गया। पहले ही दिन वहाँ मुझे अद्भुत शांति का अनुभव हुआ। फिर मैं नियमित रूप से जाने लगा। व्यसनों के अधीन होने के कारण सुबह चाय के बदले शराब और गांजा ही पीता था इस कारण गीता पाठशाला जाने के लिए हिचकिचाता था फिर भी हिम्मत रख मैंने वहाँ जाना नहीं छोड़ा। धीरे-धीरे व्यसन छूटने लगे। फिर मुझे मधुबन जाने का सुअवसर निमित्त बहनों द्वारा मिला। मैंने वहाँ दस दिन बहुत ही उमंग-उत्साह से सेवा की। कितनी भी सेवा करके मुझे थकान नहीं आती थी। जिस दिन वहाँ भगवान का अवतरण था उस दिन भगवान (बाबा)

ने मेरे सब अवगुण खींच लिये। मैंने भी दिल से सब अवगुण भगवान को दे दिये। वहाँ का वायुमण्डल स्वर्ग जैसा लग रहा था। वहाँ से वापस आने का दिल नहीं हो रहा था। मैंने भगवान के साथ रूहरिहान में कहा कि मैं अब माया की दुनिया में नहीं जाना चाहता हूँ, उधर जाने से मुझे माया खींचेगी और तमोप्रधान संस्कार होने के कारण मुझे फिर बुरे शौक लग जायेंगे लेकिन भगवान ने मुझे संकल्प दिया कि तू वहाँ जाकर सदा निर्व्यसनी रहने के चैलेंज को स्वीकार करने के लिये सिर्फ एक कदम हिम्मत का बढ़ा, मैं तुझे हज़ार कदम से मदद करूँगा। सच में भगवान मुझे मदद कर रहा है और आगे भी करता रहेगा, यह मेरा दृढ़ विश्वास है।

विवाद सुलझ गया

अब सभी व्यसन, बुरी आदतें पूर्ण रूप से छूट गये हैं और पुरुषार्थ करके मायाजीत भी बन रहा हूँ। **युगल (पत्नी) के साथ विवाद भी भगवान ने पूरा मिटा दिया है और हम दोनों ज्ञान में चल रहे हैं। सुबह उठकर अमृतवेला भी हम करते हैं। अब घर नर्क से स्वर्ग बन गया है।** ईश्वरीय संग का रंग लगने से दृष्टि, वृत्ति पवित्र बन गई है। लौकिक मित्र-संबंधी और दुनिया वाले लोग, जो मुझे बहुत बेकार समझते थे, आज मुझे 'ओमशान्ति श्रीहरि भाई' कहकर मेरा आदर करते हैं और कहते हैं कि यह तो क्या से क्या बन गया है। लेकिन मुझे अंदर से मालूम है कि मुझे ऐसा बनाने वाला तो सिर्फ शिव बाबा ही है।

मनसा, वाचा, कर्मणा सेवा

ईश्वरीय नशे के सामने बाकी नशों की कुछ भी याद नहीं आती है। संपूर्ण धारणायुक्त जीवन व्यतीत करता हूँ। दो बार ज्ञान-स्नान अर्थात् दो बार भगवान की मीठी वाणी सुनता हूँ। नशों में व्यर्थ जाने वाले पैसे बचने लगे हैं। बाबा की कृपा से एक ऑटोरिक्शा खरीदा है जिसके पीछे एक बड़ा सृष्टि-चक्र का चित्र और अंदर में पूरी आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी लगाई है। शिव बाबा का झंडा भी ऑटो पर लगाया है। उसमें जो यात्री बैठते हैं उनको बड़े नशे से भगवान का परिचय देता हूँ कि जैसे हमारा शरीर का पिता है वैसा ही शरीर में विद्यमान आत्मा का भी पिता है परमपिता परमात्मा शिव। भगवान से हमें क्या प्राप्ति होती है, यह भी उनको बताता रहता हूँ और कहता हूँ कि परमात्मा शिव विश्व की बादशाही देने आये हैं, यह वर्सा ले लो, नहीं तो वंचित रह जाओगे। इस तरह शिवबाबा मुझसे मनसा, वाचा, कर्मणा सेवा करा रहे हैं। मैं इतना भाग्यशाली हूँ जो भगवान का मददगार बना हूँ। इस नशे में, खुशी से सदा उड़ता रहता हूँ। अब मेरी सच्ची शादी एक परमात्मा से ही हो गई है। मेरा इतना बड़ा परिवर्तन देखकर मेरे लौकिक पिता ने भी तंबाकू खाना छोड़ दिया है। अब वे मेरा आदर करते हैं और कहते हैं, जन्म-जन्म मुझे यही बच्चा मिले। ❖

भ्रांतियाँ बकवास.. पृष्ठ 23 का शेष

वापसी के नाम से मन हुआ उदास

हमें तो शान्तिवन-मधुबन जाकर ऐसा अनुभव हुआ कि जो भी एक बार शिवबाबा के घर गया, वहाँ की मिट्टी में इतनी शक्ति है कि बस वहीं का होकर रह गया। हमें एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं मिला जो वहाँ जाकर प्रभावित न हुआ हो। हम तो अपने आपको किस्मत वाले समझ रहे हैं, जो इतनी जल्दी स्वर्ग जैसे स्थान के दर्शन करने का सुअवसर मिला। वापस आने का समय आया तो मन बहुत उदास हो गया। पता ही नहीं चला, कब पाँच दिन बीत गये। पहले जब कहीं जाते थे तो दो-तीन दिन बाद ही घर आने को दिल करता था परंतु यहाँ से तो वापस आने का दिल ही नहीं कर रहा था। जो भी बहन-भाई अब तक शान्तिवन-मधुबन नहीं जा सके हैं, मेरी प्रार्थना है कि एक बार अवश्य इस नई दुनिया का अनुभव प्राप्त करें। ❖